राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

प्रेम उपदेश

बचन १

दीनता और दासनदासता से सतगुरु और सत्तपुरुष राधास्वामी राज़ी होते हैं । और प्रमाण इसका प्रघट है कि सबको दीनता पसंद है । और दीनता और दासनदासता में निहायत शीतलता और आराम और बेफ़िकरी है । और आपा ठानने और अहंकार करने में निहायत तकलीफ़ और निरासता है ॥

बचन २

मालिक की प्रसन्नता जो चाहते हो तो मन और संसारियों की अप्रसन्नता का ख्याल दूर करना चाहिये । क्योंकि जिस काम से मालिक राज़ी होगा उस में मन को ज़रूर थोड़ी तकलीफ़ होगी । और मन की तकलीफ़ से दुनियादार नाराज़ होंगे ॥

बचन ३

दुनियादारों को भक्तों का हाल और चाल देखने से ऐसी ही जलन और दुख होता है जैसा कि भक्तों को अपने

दोस्त और रिश्तेदारों का संसार में बंधन और बेपरवाही परमारथ की देखकर अफ़सोस होता है। ग़रज़ यह कि दुनियादार अपनी नादानी से भक्तों को भूल और चिंता में पड़ा हुआ और दुखी देखते हैं और तान करते हैं। और भक्त बसबब खुलने दृष्ट अंतर के दुनियादारों की हालत ख़राब देख कर और उनके परलोक के बिगड़ने का ख़्याल करके अफ़सोस करते हैं॥

बचन ४

प्राप्ती मालिक की बिना अभ्यास और मिहनत और प्रेम के मुमकिन नहीं है। और जब तक कि कोई भोगों के रस की और मैल दुनिया की चाहों का मन के दर्पण से किसी क़दर दूर न होगा तब तक प्रेम दिल में पैदा न होगा। इस वास्ते किसी क़दर बैराग सच्चा ज़रूर चाहिये तब अभ्यास का आनंद मालूम होवे। और जब तक कि प्रेम नहीं तब तक जो कोई कुछ काम परमारथी करता है वह परमारथी कर्म में दाख़िल होकर सहज २ सफ़ाई दिल का फल देवेगा। इस वास्ते सबको चाहिये कि राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और परतीत पैदा करें और उनके हो जावें यानी सच्ची सरन क़बूल करें तो अलबत्ता उद्धार हो जावेगा॥

बचन ५

भोग और बिलास दुनियाँ के और सब सामान उसका नाशमान और ज़हर हलाहल है। और भूल और ग़फ़-

लत और सुस्ती और ज़्यादा चाह दुनियाँ की उससे पैदा होती है। और प्रेम चरनकँवल सत्तपुर्ष राधास्वामी का कम हो जाता है बल्कि बिल्कुल ढक जाता है। हर एक के दिल में प्रेम का भंडार मौजूद है पर दुनियाँ की चाह के मैल से ढका हुआ है। सतसंग और भजन और बैराग से मैल दूर होता है। जब सफ़ाई प्राप्त हुई तब ही प्रेम परघट हुआ॥

बचन ६

माया का रूप कनिक और कामिनी है इससे बैराग सच्चा करना चाहिये। और बाक़ी सब सामान दुनियाँ के इसके साथ हैं। जब तक कि मुहब्बत उनकी किसी क़दर दूर या कम न होगी और बैराग इन पदार्थों की तरफ़ से न आवेगा तब तक प्रेम का परघट होना और मिलना अभ्यास के आनंद का नहीं हो सक्ता। याने जब तक कि मन में और आँख में तरह २ के सरूप दुनियाँ के धरे हैं दर्शन प्रीतम का कैसे प्राप्त होगा॥

बचन ७

चित्त और मन में दो बिकार हैं चंचलता और मलीनता। जब तक कि यह दोनों बिकार मन से दूर न होंगे भजन का रस नहीं आवेगा॥

बचन ८

पूरा अधिकारी जल्दी मतलब को पहुंचता है जब

सन्मुख पूरे गुरू के आवे। और अनअधिकारी को एक मुद्दत चाहिये कि दुरुस्त होवे॥

बचन ९

हजूर राधास्वामी कुल्ल मालिक दयाल हैं और सब हाल देख रहे हैं और जो कुछ है उनकी मौज से हो रहा है। अलबत्ता बग़ैर बाहरी सहारे के घबराहट बहुत होती है और जब अँतर में सहारा जैसा चाहिये नहीं मिलता और बाहर से भी नहीं तो घबराहट और बेकली ज़्यादा होती है। पर यह समझना चाहिये कि यह हालत जो मालिक ने अपनी मौज से पैदा करी है इस में भी कुछ दया और भेद है यानी अंतर में कुछ फ़ायदा होने का मतलब है और यह हालत चरनों में प्रीत और परतीत की पक्की और गहरी करनेवाली है इससे निरास न होना चाहिये। हजूर राधास्वामी दयाल की दया को अपने निकट देखना और मेहर को अपना निगहबान और रक्षक समझना चाहिये॥

बचन १०

घबराहट के साथ कभी २ शांती और आनंद भी वेही अपनी मेहर से बख़्शेंगे। भरोसा उनके चरणों का दृढ़ रखना और प्रीत चरनों में बढ़ाते रहना चाहिये॥

बचन ११

राधास्वामी नाम का सुमिरन ज़बानी आहिस्ता २ या मन से और सरूप का ध्यान जितना बने करना चाहिये

बिरह और उमंग लेकर या प्रीत के साथ जब इन मैं से कोई बात न हो तो नेम की तरह, और नेम मैं भी मन न लगे तो उनके चरनों का ख़्याल करते हुए चुप्प हो रहो, या बानी मैं से कोई शब्द जो तुमको अधिक प्यारा लगता होवे, या जिसके पढ़ने से बिरह जागे या प्रीत उमगे या रोना आवे या मन सिमट आवे अपने मनहीं मन मैं या आहिस्ता २ या अपने तौर पर गाकर के पढ़ो और उनकी मेहर का इन्तज़ार करते रहो। धीरज के साथ चलना मुनासिब है और जहाँ तक हो सके अपने आनंद और हालत को हज़म करना यानी गुप्त रखना चाहिये और किसी तरह निरास न होना चाहिये॥

बचन १२

ख़्याल करो कि जब हज़ूर सतगुर दयाल राधास्वामी आप बख़्शिश करने के लिये यहाँ आये तो जो उस बख़्शिश के सच्चे माँगने वाले हैं उनको ख़ाली नहीं रक्खेंगे। उन्हों ने तो लोगों की ख़ातिरदारी करके उनको आप चरनों मैं लगाया और जो कि आपही उन से परमारथ की दया माँगते हैं उनको ज़रूर देंगे, पर सब को इस लायक़ बना रहे हैं कि अपनी दया उनके हिरदे मैं रक्खें। यह समय भजन का है, और भजन मैं भी तकलीफ़ ज़रूर मालूम होगी क्योंकि मैल कटता है, सफ़ाई होती है। जनम २ की धूल और गुब्बार से हृदय रूपी मकान मैला हो

रहा है। बड़े भाग कि सतगुर मिले और उन्हों ने चरनों में लगाया और अब आप राधास्वामी दयाल मकान को साफ़ करवा रहे हैं ताकि सब को अपने दर्शन और दया से निहाल करें। जब तक सफ़ाई होवे तब तक जल्दी और घबराहट नहीं चाहिये, पर बिरह की घबराहट अच्छी है। करमों के कटने में देर है सो जितना जल्दी मुनासिब होगा काटेंगे और काट रहे हैं। कोई दिन में जब कुछ प्रेम झलकेगा तब आनंद चरनों का प्राप्त होगा ॥

बचन १३

यह बात ठीक है कि जब तक ताक़त न बख़्शी जावेगी मौज पर नहीं रहा जा सकता है सो जब मन घबरावे या बेकल होवे या रूखा फीका हो जावे तो कुछ चिंता नहीं है। सतगुरु अंतरजामी सब जानते हैं वे ऐसी हालतों से अपनी मेहर और दया में अंतर नहीं करते हैं। बालक का स्वभाव है कि माता पिता से जब उसके मुआफ़िक़ कोई मतलब की बात न होवे तो रूठ जाता है और सुस्त हो जाता है पर यह चाहिये कि उनका बालक बना रहे और जो रूठे तो उन से, और प्रीत प्यार करे तो उनसे, और लाड़ करे तो उनसे करे ॥

बचन १४

हज़ूर राधास्वामी दयाल की बड़ी दया और मेहर

है। और जो कि सब बातौं मैं वे आप करता और धरता हैं कुछ डर लोगौं की तान वग़ैरह का न करना। बल्कि तान मारने वाले को अपना मेहरबान समझना, क्यौंकि अनेक तरह की दुरुस्ती उन्हीं की तान से होती है। यह भी हजूर राधास्वामी दयाल की निज दया है। इसी से गम्भीरता प्राप्त होगी, और कोई बचन अहंकार या बेपरवाही या रंज का कभी किसी से न कहना बल्कि क्षिमा को अपना ख़ास बरताव समझना और जो क्षिमा न होवे तो समझो कि हमारे मैं कसर है और हम से काररवाई दुरुस्त नहीं हुई॥

बचन १५

प्रेमी को चाहिये कि हजूर राधास्वामी दयाल की मेहर और दया दिन २ बढ़ाने के वास्ते सब की तान और निंद्या सहे। लेकिन यह समझ हर वक्त़ नहीं रहती है। पर जब २ होश आवे तब यही बिचारे कि तान लगाने वाले हजूर राधास्वामी दयाल ने अपनी मेहर से मेरे गढ़ने के लिये औज़ार मुक़र्रर किये हैं अहंकार या किसी पर ज़ोर या किसी के बचन पर क्रोध न करे, और जो क्रोध आवे तो जितना बने अंदर मैं रोके और बिचार करके हटावे याने जहाँ तक हो सके बाहर उसको परघट कम करे और सब की ख़ातिरदारी और दिलासा जितना

बन सके अपनी तरफ़ से करे आगे हज़ूर राधास्वामी दयाल की मौज ॥

वचन १६

सब को चाहिये कि सतगुर के चरनौं मैं प्रार्थना करके सरूप के ध्यान मैं सुर्त लगावैं और जो शब्द मैं सुरत अच्छी तरह नहीं लगती तो कुछ हर्ज नहीं है सरूप का ध्यान विशेष करैं और जब उसमैं भी मन तरंगैं उठावे, तो सुमिरन सहित ध्यान करैं याने मन से राधास्वामी नाम लिये जावैं और दृष्टी और सुरत सरूप मैं लगावैं। हज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी दया से कुछ रस और शांती जैसा मुनासिब होगा बख़्शैंगे ॥

वचन १७

बेकली और घबराहट और अशांती मन के लिये बड़ी फ़ायदामंद है, पर सही नहीं जाती है। इसका नफ़ा पीछे मालूम पड़ता है। पर मन का यह हाल है कि बेकली और घबराहट मैं जल्दी भिच जाता है और दुखी होने लगता है सो कुछ हर्ज नहीं है। हज़ूर राधास्वामी दयाल अंतरजामी सब जानते हैं और हर एक की ताक़त की उनको ख़बर है। वे हर एक को उतनी ही बेकली बख़्शैंगे जितनी कि वह सह सके और आपही सब तरह सम्हाल करते हैं दूसरे की कुछ ताक़त नहीं है ॥

वचन १८

भरोसा चरनौं का दृढ़ रक्खो और करमौं के कटने

में मत घबराओ और धीरज लाओ। सब पर यह हालत गुज़रती है और जो २ सच्चा होकर चरनों में लगेगा उसी के कर्म ज़रूर काटे जावेंगे और कर्म कटते वक्त थोड़ी बहुत तकलीफ़ ज़रूर होगी सो उसको हजूर राधास्वामी दयाल की दया जानकर सहो। जल्द शांती भी बख़्शेंगे। यह सब दया प्रेम और भक्ती और परतीत को बढ़ाने वाली है। इस को निज मेहर और कृपा जानो। बड़ा भाग है जिन को यह मिले। नहीं तो संसार अँधेरे में भटक रहा है और करम और भर्म में फँसता जाता है और अनेक तरह के दुख और सुख सहता है और फिर उनसे बेख़बर। और जो कोई डरता है उसके वास्ते सब तरह के सुख की तइयारी हो रही है। जो कुछ पिछले करमों का भोग है वह बहुत जल्द और आसानी के साथ काटा जायगा क्योंकि बिना कटे हुए उनका असर नहीं जायगा और परम बिलास चरनों का नहीं मिल सकता है।

दोहा

डर करनी डर परम गुर, डर पारस डर सार।
डरत रहे सो ऊबरे, ग़ाफ़िल खाई मार॥

बचन १६

जिस किसी सच्चे प्रेमी का यह हाल है कि जब

किसी की भक्ती की बढ़ती का हाल सुनता है तब ही अपनी ओछी हालत से मिला कर सुस्त और फ़िकरमंद हो जाता है सो यह बहुत अच्छा है और यह निशान दया का है। इसी तरह इस जीव को ख़बर पड़ती है और अपनी हालतों को देखता है और अपने मत को चित्त से सुनता है और बिचारता है। ग़रज़ कि इस में सब तरह की गढ़त है इसको दया समझो॥

बचन २०

जो वक़्त ध्यान और भजन के बजाय सरूप सतगुर के कुटुम्बी और मित्रों की सूरतें नज़र आवें उसका सबब यह है कि वह सरूप अभी हिरदे में धरे हैं आहिस्ता २ निकल जावेंगे हज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी दया से सब तरह सफ़ाई करते हैं॥

बचन २१

हज़ूर राधास्वामी दयाल सब तरह से जीवों पर दया कर रहे हैं और दया के भी अनेक रूप हैं जैसे उदासी तबीयत की भी एक तरह की दया है। हर एक को यह उदासीनता नहीं मिलती इसमें भी कुछ भेद है। ऐसा नहीं होता कि हर वक़्त तबीयत सुस्त रहै पर किसी क़दर सुस्ती और उदासीनता रहने से बड़े फ़ायदे हैं॥

बचन २२

हज़ूर राधास्वामी दयाल आप सब को अंतर में

सम्हालते हैं पर एक सतसंगी दूसरे सतसंगी का हाल देख कर जो अपनी समझ के मुवाफ़िक़ कोई बचन समझौती का सुनावे तो उस में कुछ हर्ज नहीं है। पर इतना कहना सब के वास्ते ठीक है कि हुजूर राधास्वामी दीन-दयाल और समरथ हैं और जिस २ ने उनके चरनों की सरन सच्ची ली है उसकी फ़िक्र और ख़बरगीरी वे आप करते हैं पर उनकी दया की सूरतें अनेक हैं और वे सच्चे प्रेमी और बिरही को जो निरख परख के साथ चलता है अंतर और बाहर जल्द मालूम पड़ती हैं॥

बचन २३

जैसी हालत जिस किसी सच्चे प्रेमी पर जब तब गुज़रती है वह हुजूर राधास्वामी दयाल की मौज और दया से है और उस हालत में हुजूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से आहिस्ता २ तरक़्क़ी परमारथ की बख़्शते जावेंगे यानी कोई दिन सुस्ती और बेकली और कोई दिन आनंद और मगनता यह दोनों हालत संग संग चलेंगी। बेकली और घबराहट और सुस्ती ऐसी हैं जैसे सूरज की गरमी और शांती और आनंद जो उसके पीछे प्राप्त होवे वह ऐसा है जैसे बरखा मेघ की। इन दोनों का आपस में जोड़ और संग है सो किसी को घबराना नहीं चाहिये और बहुत जल्दी करना भी मुनासिब नहीं है क्योंकि मनुष्य की जल्दी से कुछ कारज नहीं बन

सकता है। हज़ूर राधास्वामी समरथ दयाल प्रेमी और दर्दी भक्तों की चाह के मुवाफ़िक़ बहुत जल्दी काम बनाते हैं पर इस दया की ख़बर धीरे २ मालूम पड़ेगी। शुरू में इसकी परख बहुत कम होती है॥

बचन २४

मन का क़ायदा है कि दर्शन के वास्ते बहुत जल्दी करता है और जब कि यह चाह ज़ाहिर में जल्दी पूरी नहीं होती इस सबब से मन में संशय पैदा होता है पर हज़ूर राधास्वामी दयाल शब्द सरूप से हर एक जीव के सदा संग हैं यानी उसके अंतर में मौजूद हैं। सतगुर रूप से प्रघट दर्शन अवसर नहीं देते हैं और इसमें भेद है नहीं तो दुरस्ती और तरक़्क़ी परमारथ की रुक जाने का डर है याने आगे रस्ता जैसा चाहिये नहीं चलेगा और मन नीचे अस्थान पर सरूप के दर्शन में संतोष करके मगन हो जावेगा, और जो वे इस तरह पर जैसा जल्दी मन चाहता है दर्शन देकर ऊपर को खींचेंगे तो अजब नहीं है कि इधर से टूट जावे या बेहोश होकर या मतवाला सा पड़ा रहे इस वास्ते जैसा २ मुनासिब है वे आप दया करके सच्चे परमारथी का काम बनाते हैं। हरदम शुकराना उनकी दया का करना और प्रीत और परतीत चरनों में बढ़ाना चाहिये

और जब घबराहट हो उसको सहना और अपने मन की कचाई और मलीनता पर चित्त में शरमाना और पछताना और प्रार्थना के साथ दया और मेहर माँगते रहना मुनासिब है और इस बात का चित्त में द्रढ़ निश्चय और भरोसा रखना चाहिये कि हजूर राधास्वामी दयाल को हर एक की तरक्की और दुरस्ती जो जो सच्चे होकर सरन में आये हैं उनकी चाह से विशेष मनजूर है ॥

वचन २५

मन की अजब हालत है कि यह चरनों में सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के सच्चा होकर नहीं लगता है और न सचौटी से बरताव करता है और दुनियाँ के भोगों की चाहों को नहीं छोड़ता बल्कि उन्हीं को माँगता है। असल तो यह है कि जब तक कि हजूर राधास्वामी दयाल अपनीमेहर की मौज से इसको अंतर में ठेका और ठिकाना न बख्शेंगे तब तक यह मन डावाँ डोल रहने में लाचार है। इसका बस नहीं चलता किधर लगे और यह किसी तरफ़ बिना लगे रह नहीं सकता और जब तक कि उद्दम के काम में रहा कुछ याद न आई और जब उससे निचिंत हुआ तब क्या करे जो हजूर सतगुर राधास्वामी दयाल की

सेवा करना चाहे जैसे पोथी का पाठ या नाम का सुमिरन या शब्द का सरवन या सरूप का ध्यान तो जब तक कि इसको उसमें रस और कुछ मज़ा न मिले और ठिकाना हाथ न लगे तो कैसे लगे और इसको भय और भाव ऐसा नहीं है कि सब काम और चाहें इधर की छोड़ कर प्यासे की तरह उधर को दौड़ कर चरन में लिपट जावे। जो इस क़दर प्यास और चाह होती तो कुछ मुशकिल न होती जैसे हाकिम और रोज़गार के ख़ौफ़ से इधर घन्टों बे ख़बर होकर काम में लग जाता है ऐसे ही चाहिये था कि सतगुर और उनके चरन रस का ख़ौफ़ और शौक़ करके इधर भी लग जाता। पर असल में घाटा प्रेम और शौक़ का है चाहे उसे शौक़ कहो चाहे ख़ौफ़ पर यह प्रेम सतगुर की दात है। जो वे चाहें तो यह मन एक छिन में लग सकता है और सब कैफ़ियत उस वक़्त प्राप्त हो सकती है पर वास्ते प्राप्ती इस ख़ास दया के क़ाबिलीयत याने अधिकार चाहिये और नहीं तो टक्कर मारा करे और चक्कर खाया करे कुछ नहीं बन पड़ता है इस वास्ते क्या कहा जावे सब तरह क़सूर अपने भाग और शौक़ का है। हजूर राधास्वामी दयाल की दया में कुछ संदेह नहीं है और जो चरनों में लगा रहा तो यह कसर

शौक़ और भाग को भी वेही अपनी मेहर से एक दिन मिटा देवेंगे। उन्हीं का भरोसा रखना चाहिये और जो कभी अभ्यास के समय विशेष आनंद प्राप्त होवे, या कभी कोई सख़्त तकलीफ़ सिर पर आ पड़े, तो उसके बरदाश्त और हज़म करने की ताक़त भी वेही अपनी मेहर से बख़्शेंगे ॥

बचन २६

हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया का भरोसा रक्खो वे सब तरह सम्हालने वाले हैं और अब भी सब तरह से रक्षा कर रहे हैं और करेंगे। मत घबराओ, और जब कभी तबीयत को किसी क़दर तकलीफ़ होवे उसको भी ख़ास दया समझो, क्योंकि यह कारख़ाना इसी ढंग पर है। इसमें बिना खैंचा तानी मन के काम नहीं चलता, और इसमें भी दया संग है इस क़दर तकलीफ़ नहीं होगी कि जिसको बरदाश्त न हो सके, क्योंकि वे कभी बिना अपनी दया का हाथ लगाये हुए मन को नहीं ठोकते हैं। बेशक तबीयत बहुत घबराती है पर उसमें फ़ायदा समझो, यह मन इसी तरह गढ़ा जाता है, और कोई दिन को यह तकलीफ़ है। हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से शान्ती भी बख़्शेंगे थोड़े दिन सबर करो और जब तबीयत ज़ियादह घब-

रावे तो हाल अपना अंतर में वक्त भजन या ध्यान के हजूर के चरनों में अर्ज़ करो, इस में मत शरमाओ और न कुछ और खयाल करो सब के मन का यही हाल है और जब ज़ियादः अकुलाहट और बेकली होती है तब घबराहट की बरदाश्त नहीं होती है। उस वक्त पुकारने में आराम मिलता है सो इसका कुछ हर्ज नहीं है। करता धरता सब तरह से हजूर राधास्वामी दयाल आप हैं। वे अपनी दया ज़रूर करेंगे पर इस क़दर चाहिये कि चरनों की जिस क़दर याद बन सके, और सरूप का जिस क़दर ध्यान हो सके, और नाम का सुमिरन और शब्द का सरवन जिस क़दर हो सके, इसमें लगे रहो और जो मन तरंगें बेफ़ायदा उठावे और तुम्हारा कुछ बल पेश न जावे तो ख़ैर। पीछे इसके जो पछतावा होता है वही उसकी सज़ा और दवा है। इसी तरह यह मन दंड पाते पाते आहिस्तः २ दुरुस्त हो जावेगा। यह भी हजूर राधास्वामी दयाल की एक तरह की मौज मन के गढ़ने की है॥

वचन २७

यह मन बेकली से बहुत घबराता है और जैसी घबराहट है ऐसी तेज़ चाह दर्शन की उसको नहीं है जो यह होवे तो चित्त में बैराग और उदासीनता

समाए रहे, और जब चरन और सरूप और नाम में लगे तबही उसको रस आने लगे, और गुनावन और तरंगें हट जावें तो घबराहट काहे को आवे पर यह मन तरंगें बुरी उठाये बग़ैर नहीं मानता है, इस से रस नहीं मिलता है। और जब अपनी ऐसी हालत को देख कर और समझ कर पछताता है उसी की घबराहट पैदा होती है, सो घबराओ मत हजूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से इसकी दुरुस्ती करेंगे, मगर आहिस्तः २। एक रोज़ में इस मन के टुकड़े और नाश करना मंज़ूर नहीं है, नहीं तो शरीर का काम जैसा चाहिये नहीं देवेगा इस वास्ते सहज २ इस काम का होना मुनासिब है॥

बचन २८

दुनिया के कारख़ाने देह के हैं, और यहाँ अस्थूल मन काररवाई करता है। दुनिया की नरमी और सख़्ती या आराम और तकलीफ़ में यह होशियार होकर काम पूरा देता है, पर परमारथ में इस मन के टुकड़े होते हैं इस वास्ते परमारथ का इसको शौक़ कम है। अलबत्ता सुरत को प्रेम है। सुरत सतगुर के बचन को सुनकर चाव उठाती है, पर जो कि अभी मन के आधीन है इस सबब से यह मन उसको जैसा कि चाहिये परमारथ के काम में लगने और तरक्क़ी करने नहीं देता है, और जब

अभ्यास का वक़्त आता है तब आलस और कमी शौक़ की मालूम होती है। पहले तो यह मन परमारथ के बचन और इरादे को भुला ही देता है और जो याद भी रहे तो उस में सुस्ती पैदा करता है याने उमंग के साथ उनको नहीं क़बूल करता है और न उस में लगता है और परमार्थी खर्च के मुआमले में भी ऊँच नीच सुझाता है। जब मन ऐसा निर्बल है तब ऐसे वक़्त में अगर कोई बाबत परमारथ के तान मारे तब और भी गिर जाता है और जितना करना चाहता था फिर उतना भी तन मन धन परमारथ में नहीं लगा सकता है। यह सबब सबकी शिकायत का है थोड़े दिन ऐसेही हालत रहेगी तब प्रीत निज मन में अच्छी तरह धस जावेगी तब प्रेम की तरक्की शुरू होगी और तब वह प्रेम किसी क़दर ठहराऊ होगा॥

बचन २९

जो कुछ ऊपर लिखा गया यह काम सहज नहीं है इसवास्ते भरोसा राधास्वामी दयाल की दया और मेहर का पक्का करके धीरज के साथ काररवाई करो और हाल में जो तकलीफ़ घबराहट और बेकली वग़ैरह की आवे या कभी २ रस न मिले तो उसको सब्र के साथ झेलो। इसी सबब से दुनिया में बहुत कम अधिकारी परमारथ के हैं यानी इस तकलीफ़ और घबराहट की

बरदाश्त नहीं हो सकती है, और मन जल्दी करता है। क्योंकि सब तकलीफ़ इसी पर पड़ती है और जो जल्दी काम बनता न देखे तो आलस लाकर छोड़ने को तइयार हो जाता है, या संसय उठा कर न्यारा हो जाता है, या निरास होकर घबरा जाता है, और सुस्ती ले आता है। ऐसे ही बहुतेरे लोग रास्ते में रह गये और थोड़ा बहुत काम शुरू में कर के आगे सहने की ताक़त न लाकर उसी को पूरा समझ कर सरन पर ठहर गये; कि अब हमारे उद्धार में तो कुछ संदेह नहीं रहा, मिहनत और तकलीफ़ की क्या ज़रूरत है। और इसमें कुछ संसय नहीं कि राधास्वामी दयाल अपनी दया से अंत समय पर उनके जीव का भी कारज करेंगे यानी किसी दरजे का सुख अस्थान देंगे। पर पूरा काम जबही बनेगा जब सब तरह की तकलीफ़ मन को अपने अंतर में बरदाश्त करके भक्ती और अभ्यास करे जायगा॥

बचन ३०

जो जीव बड़भागी परमारथ के हैं उनको बिना प्राप्ती दर्शन या रस के अंतर में चैन नहीं पड़ता है, और वे चाहे जैसी तकलीफ़ और घबराहट आवे सब को सतगुर की दया और मेहर से सहते हैं और अपना इरादा पहुंचने धुर पद का और वहाँ जाकर सत्तपुर्ष राधास्वामी के दर्शन और बिलास के प्राप्त होने का नहीं छोड़ते हैं

और फिर वही जीव आहिस्ता २ एक दिन गुरमुख बन जावैंगे, बल्कि उनकी साध गती तो पहिले ही से शुरू हो जाती है पर अस्थान ज़रा नीचा रहता है सहज २ चढ़ाई होती है और आगे सतगुर दयाल की मौज है चाहैं एक जनम मैं धुरपद बख़्शैं और चाहे दो जनम मैं यानी पहिले जनम मैं दसवाँ द्वार और दूसरे जनम मैं निज अस्थान मैं पहुँचावैं और यह दोनों अस्थान बड़े हैं और पहुंचने वाले को बड़ा आनंद और सब तरह की निर्मलता प्राप्त होती है, और दोनौं अस्थान मैं सतगुर का संग मिलता है । अब हज़ूर राधास्वामी दयाल की दया और मौज का हरदम शुकर करना चाहिये ॥

बचन २१

घबराहट और बेकली चलाने वाली और रास्ता काटने वाली है और उमंग और शौक़ बढ़ाने के वास्ते यह सतगुर ने मेहर करके दी है । अल्बत्तः वक्त घबराहट के तबीयत को बहुत बेचैनी होती है और दया और मौज जो गुप्त है नज़र नहीं आती है, बल्कि उल्टा उसके मालूम होता है, पर जब उसका चक्कर हट जाता है तब मालूम होता है कि यह घबराहट फ़ाइदेमंद थी; और जो यह बात किसी को न मालूम पड़े तो समझना चाहिये कि इस घबराहट के पीछे ज़रूर दया आवेगी । यह घबराहट दया का अगुआ है, फिर अपने प्यारे

राधास्वामी दीन दयाल की भेजी हुई घबराहट को बुरा न जानना चाहिये। कोई दिन यह बेक़रारी ज़्यादा तपन के साथ रहेगी और फिर आहिस्तः २ यह तपन कम होती जावेगी और घबराहट में कुछ मज़ा मिलने लगेगा ॥

बचन ३२

ऐसे घबराहट के वक़्त जो बन सके तो हुज़ूर राधास्वामी दयाल के सरूप का ध्यान या पहिले स्थान के सरूप का ख़्याल और नाम का सुमिरन मन से करो और उनकी समय २ की दया और लीला की याद थोड़ी बहुत प्रीत और प्रेम के साथ मन में लाओ तो उस में कुछ फ़ायदा मालूम होगा और जो यह न हो सके तो सिर्फ़ सरूप का या नाम का ख़्याल करो ऐसा समझ कर कि वेही मालिक कुल्ल हैं चाहे जैसे रक्खें और वे अपनी दया से ज़रूर सहारा देंगे और जो घबराहट के वक़्त परमारथी ख़्याल उठें उनको मत रोको। जो थोड़ा बहुत भी मन चरनों में लगा रहेगा या उधर का ख़्याल भी रहेगा तो भी किसी क़दर फ़ायदा होगा ॥

बचन ३३

सतगुर के चरनों में प्रार्थना करना वास्ते इसके कि किसी क़दर सहारा इतना बख़्शें कि थोड़ी बहुत शांती आवे ज़रूर चाहिये। पर इतना समझ लो कि

जब तक सफ़ाई अंतरी नहीं होगी तब तक पूरी शांती नहीं हो सक्ती क्योंकि जब तक शूक्षम मन के अंग बाक़ी हैं तब तक पूरी शांती का आना नुक़सान करता है थोड़ी तड़प और बेकली और बिरह का पैदा होते रहना कभी २ वास्ते सफ़ाई और तरक्की के ज़रूर है, इस वास्ते घबराओ मत और जल्दी मत करो; सतगुर अपनी मेहर से जितना सहारा मुनासिब है अंतर मैं आप सब को देते हैं और किसी क़दर तड़प और बिरह भी लगाये रखते हैं कि जिस मैं काम बनता जावे पर इतनी नहीं कि जिस मैं तकलीफ़ होवे या उसकी बरदाश्त न होवे। सिर्फ़ इस क़दर कि कभी २ मन उदासीन हो जाते और कभी २ परमारथ का आनंद भी आवे। मतलब यह कि इन दोनौं हालतौं का थोड़ा बहुत दौरा होता रहेगा॥

बचन २४

वग़ैर थोड़ी तड़प और बेकली और घबराहट के कुछ काम नहीं बनता है, और यह चीज़ैं सतगुर केवल उन्हीं लोगौं को बख़्शते हैं जिन पर दया है, और जिनको इसी जनम मैं सम्हालना मंज़ूर है और चरनौं मैं निज करके लगाना है; और वैसे तो सब अपने २ दरजे पर मेहर के लायक़ हैं पर यह मेहर निराली है और इस मेहर की झटक भी वही झेल सकते हैं

जिनको वे अपनी मौज से ताक़त बरदाश्त ऐसी हालत की देवैं, नहीं तो दूसरे तो घबराकर ऐसी हालत से हट जाना या उस हालत का दूर होना चाहेंगे। और फिर ऐसों को पहिले तो ऐसी तेज़ हालत प्राप्त ही नहीं होती है, और जो होय भी तो शायद कुछ थोड़ी देर के वास्ते। पर उसकी भी उनसे बरदाश्त नहीं होती और वे नहीं चाहते कि फिर उनकी ऐसी हालत होवे, इस वास्ते सतगुर दयाल उन पर इस तरह की बख़्शिश भी नहीं करते यानी आगे के वास्ते छोड़ देते हैं। और जिन पर निज मेहर है उनको चाहे तकलीफ़ घबराहट और बेकली और तड़प की मालूम पड़े पर वे बिना ऐसी हालत के अपने तईं ख़ाली देखते हैं, और चाहते हैं कि या तो दर्शन का आनन्द मिले और नहीं तो बिरह की खटक जारी रहे इस तरह तो उनको चैन होता है नहीं तो बेचैनी रहती है॥

बचन ३५

यह सही है कि शुरू में बिना बाहर के सहारे के चलना कठिन है, पर यह भी समझना चाहिये कि कब तक बाहरी चाल चलेगी। कुछ अंतर में भी ज़ोर देना और उसके वास्ते तन मन और इन्द्रियों को रोकना

ज़रूर है, क्योंकि जब तक यह न होगा अंतरी सफ़ाई न होगी और जब तक अंतरी सफ़ाई प्राप्त नहीं तब तक इस जीव की प्रीत का भरोसा नहीं हो सकता। थोड़े दिन की घबराहट और बेकली होगी और फिर सहज २ हलकी हो जावेगी, और खटक भी साधारन रह जावेगी इस वास्ते पहिले सफ़ाई मन की करना और जैसे बने तैसे उसको ज़ोर देकर सतगुर राधास्वामी दयाल के चरनों में लगाये रखना साथ इन दस जुगतियों के मुनासिब मालूम होता है॥

(१) पोथी का पाठ करना समझ कर, (२) नाम का सुमिरन करना (३) ध्यान सतगुर के सरूप का करना (४) चितवन करना सतगुर की लीला और बिलास का, (५) धुन्यात्मक नाम यानी शब्द का सरवन अंतर में मन और सुरत से करना, (६) सत्त-पुरुष राधास्वामी दयाल के मत की चरचा सुनना या आप करना, (७) सतगुर राधास्वामी दयाल की बानी का सरवन करना, (८) नित्त सोच और फ़िकर करना कि कैसे मेरे जीव का गुज़ारा सतगुर राधास्वामी दयाल करेंगे और अपने को निपट नीच और नालायक देखना और अपने औगुनों को निरखते चलना, (९) अपने मन और इन्द्रियों के हाल और चाल पर

जितना हो सके निगाह रखनी, कि किस २ पदारथ और तरंगों और गुनावन में बहते रहते हैं और जितना होसके उनको रोकना, (१०) शरमाना और पछताना और झुरना अपने मन और इन्द्रियों के हाल और चाल देखकर और मनही मन में प्रार्थना करना सतगुर राधास्वामी दयाल के चरनों में सच्चे दुखी होकर वास्ते प्राप्ती मेहर और दया के और कभी २ सुनाना थोड़ा सा अपने मन के हाल को प्रेमी और मेली सतसंगिन या सतसंगी को जो सच्चा परमारथ कमा रहे हैं और अपने से भक्ती में ज़बर हैं और करना उस जतन का जो वे अपनी परख और पहिचान से बतावें॥

बचन ३९

जो कोई सच्ची लाग और दर्द सतगुर के चरनों में वास्ते प्राप्ती दया रखता है वह यह सब काम जिनका ऊपर बर्नन किया गया है थोड़ा बहुत ज़रूर करेगा और उसका फल भी मौज से अपने अंतर में देखता जावेगा और सब को चाहिये कि इन दस जुगतियों में से जो जिस वक्त और जिस क़दर बन आवे मन से करना शुरू करें यानी मन को उस वक्त थोड़ा बहुत नीचा डाल कर और उमंग और तड़प लेकर अभ्यास करें तब कुछ न कुछ दया सतगुर राधास्वामी की ज़रूर मालूम होगी॥

बचन ३७

कुल्ल मालिक और सर्व समरथ और कुल्ल दयाल राधास्वामी हैं सिवाय उनके और कोई नहीं है जो कुछ भी कर सके जो कुछ करते हैं और जो कुछ करेंगे सतगुरु राधास्वामी दयाल अपनी मौज और दया से करेंगे। उनकी दयालता अपार है पर सेवक अभी पूरी दया के लायक़ नहीं है, और बेफ़ायदा जल्दी की मौज नहीं है क्योंकि इस में हर्ज और नुक़सान और तकलीफ़ नज़र आती है। उनकी दया और मेहर में कुछ संदेह और कसर नहीं है। वे रोज़ बरोज़ काम बनाते जाते हैं, और वे अपनी मेहर से आहिस्ता २ सब काम पूरा करेंगे, इस बात को मन में परतीत करके राधास्वामी दयाल के चरनों का आसरा और भरोसा रक्खो। और इस भरोसे को ख़ूब पक्का करके चरनों को मज़बूत पकड़ना चाहिये, और जो दर्द सच्चा है तो आसरे और भरोसे को भी वे अपनी दया से पक्का करा देंगे पर आहिस्ता २॥

बचन ३८

सेवक के मन में सच्ची चाह सत्तपुर्ष राधास्वामी के चरनों की प्राप्ती की चाहिये। जो वह चाह किसी वक़्त कम या ज़्यादः हो जावे या किसी सबब से किसी वक़्त हलकी हो जावे तो कुछ हर्ज नहीं है जो सच्ची है तो तड़प के संग फिर जाग उठेगी और इसी चाह के संग

सत्तपुरुष राधास्वामी के चरनों में प्रीत और परतीत जागेगी और यही चाह उनकी मेहर से बढ़ती हुई और प्रतीत और प्रीत को पकाती हुई एक रोज़ चरनों में मिला देवेगी और यह चाह और तड़प ख़ास निशानी सतगुरु की मेहर और दया की है । जिस किसी को मिली है वेही बड़भागी हैं और इस में किसी तरह का संसय नहीं है कि उसका काम अबेर और सबेर का ख़्याल छोड़ कर ज़रूर एक दिन पूरा हो जावेगा ॥

बचन ३९.

जब जब कोई दिन सुस्ती के आवें तो सब्र और बरदाश्त करके मेहर और दया माँगते रहो और जब दिन आनन्द और बिलास के आवें तब भी उनकी मेहर और दया का शुक्राना अदा करो और इसमें बिलास और सुस्ती अंतर और बाहर दोनों समझ लेना । सतगुरु राधास्वामी ऐसी हालत जब २ और जैसा २ मुनासिब होता है आपही बख़्शते हैं पर सेवक का मन जल्दी करता है और घबराया जाता है सो इसके भी सम्हालने वाले वे आपही हैं ॥

बचन ४०

ऐसे २ बंधन और अटकें और क़ैदें पड़ी हुई हैं कि जैसा मन चाहता है कोई भी काम नहीं बनता है और कुछ

अभी नहीं हमेशा से ऐसी मौज देखने में आई है कि जिस क़दर कोई मन से इरादा निकलने का करे उसी क़दर ज़्यादा बाहरी बखेड़े बढ़ते जाते हैं और चाहे वे बखेड़े और रगड़े असली होवें चाहे केवल देखने मात्र के पर इस जीव को दुख देने और तंग करने और सुस्त रखने और कभी २ निरास करने और बिलकुल इसका बल तोड़ने को बहुत भारी मालूम पड़ते हैं और जो चाहें कि इन झमेलों के साथ तोड़ फोड़ कर चरनों में लिपट जावें तो ऐसा भी नहीं होता और जो इधर ही के काम को पहिले पूरा करना चाहें तो वह भी जिस तरह और जैसा जल्दी इसका मन चाहता है नहीं बन पड़ता बल्कि और दुख देता है और घबराहट को बढ़ाता है। यह हालत इस जीव की है कि चाहे जितना जतन करे मन के घाट से नहीं हटता और बारंबार उधर ही को झोंका खाता है इस में बड़ी लाचारी है पर इस में भी कुछ मसलहत सफ़ाई मन और बुद्धि की और तोड़ने उनके बल और भरोसे की है ॥

बचन ४१

सतगुर दयाल परमपुर्ष पूरन धनी राधास्वामी की दया बड़ी भारी है पर वे क्या करें इस जीव के बंधन मन और तन और इन्द्रियों के संग बड़े गाढ़े हैं और जुगान जुग से बँधे चले आये हैं और पुरानी आदत

उन्हीं के संग बरताव की ज़बर पड़ रही है और जो कि वे अपनी मेहर और दया से छुड़ाते हैं पर यह छूटने में भी महा दुखी होता है और मरा जाता है और टूटने को तैयार होता है तब वे फिर छोड़ देते हैं और इसकी हालत पर दया करते हैं और आहिस्ता २ निकालना मुनासिब समझते हैं एक दम के निकालने के लायक़ जीव को नहीं देखते और ज़बरदस्ती करना मंजूर नहीं है अलबत्तः काम बनाना मंजूर है और यह काम आहिस्ता २ बन सक्ता है। जैसा कि जीव बहुत मुद्दत से भूला और भरमा हुआ है ऐसे ही आहिस्तगी के साथ इसकी भूल और पुरानी आदतें दूर होवेंगी ॥

बचन ४२

और मालूम होवे कि काम के बनाव में किसी तरह का संदेह नहीं है क्योंकि हजूर राधास्वामी दयाल ने अपनी दया से सब सेवकों के हिरदे में अपनी प्रीत और परतीत थोड़ी या बहुत बख़्शिश कर दी है और जो कि मन अनेक रंगों की तरंग में बहता है पर जो हजूर राधास्वमी दयाल के चरनों की थोड़ी बहुत प्रीत सुरत और मन में धरी है उसका भी ख़याल और सोच उसको अकसर आता रहता है ॥

बचन ४३

जियादा बड़भागी वे हैं कि जिनके सदा तड़प और बेकली हिरदे में छाई रहती है और मन को दूसरी तरफ़ जाने नहीं देते और जो जाता भी है तो उसको वहाँ ठहरने नहीं देते और कुरंग की तरंगों के उठाने में उसको धिक्कार देते रहते हैं। यह सब दरजे सतगुर के चरनों की प्रीत और बिरह के हैं जिसको जितनी बख़्शिश है उतनाही उसको अपने मन में फ़ायदा और असर उसका मालूम होता है पर जो एक दम और बिलकुल मनके घाट और बाट से न्यारा होना चाहता है तो यह जब तक कि अभ्यास करके पिंड से न्यारा न होगा तब तक नहीं हो सक्ता इस वास्ते जल्दी और घबराहट नहीं चाहिये ॥

बचन ४४

किसी क़दर बेकली और घबराहट और बेचैनी और मन का किसी और काम में अच्छी तरह न लगना और बार २ सतगुर के चरनों की चाह और दरशनों की बिरह उठाना और उदासीन रहना यह सब निशान सतगुर राधास्वामी दयाल की मेहर और दया के हैं और इसी से ज़ाहिर होता है कि जिन लोगों की ऐसी हालत है उनके काम को वे जल्दी से बना रहे हैं ॥

बचन ४५

और जिनको अंतर में शांती और रस इस क़दर मिल जाता है कि जब चाहैं जब थोड़ा बहुत चरन रस लेवैं उन की हालत में इतना भेद होगा कि उनको बिरह और बेकली अंतरी होगी पर हर वक़्त नहीं जब २ मौज से थोड़ी भी होगी वह बहुत काम थोड़ी देर में बनालेगी और मेहर और दया उस दरजे के मुवाफ़िक़ प्राप्त होती जावेगी ॥

बचन ४६

और जिनको कि अभी खटक कम है और जब २ सतसंग में आवैं उस वक़्त बचन सुनकर और औरों की हालत देख कर खटक और बेकली पैदा हो जाती है या दुख के वक़्त याद आ जाती है और कुछ देर ठहरती है और फिर हलकी हो जाती है या भूल जाती है वह भी अच्छे हैं आहिस्ता २ उनका काम भी बन जावेगा और खटक रोज़ बरोज़ बढ़ती जावेगी और मालूम होवे कि यही खटक और यही बिरह और यही बेकली और यही सोच और फ़िक्र और यही प्रीत जिसका ज़िक्र ऊपर किया गया है सतगुर राधा-स्वामी दयाल की मेहर और दया की दात का निशान है इसी से उद्धार की सूरत रोज़ बरोज़ नज़र आवेगी।

इस मैँ किसी तरह का संदेह नहीँ है ॥

बचन ४७

जिनके मन मैँ ऐसी चाह ज़बर है कि इसी देह मैँ जिस क़दर जल्दी होवे तन मन से न्यारे होकर सतगुर के निज सरूप का दर्शन और चरनरस लेवैँ उनकी बिरह और बेकली और खटक ठहराऊ होगी, और कोई पदारथ संसारी या ख़ुशी वग़ैरह इस तरफ़ की उनकी बिरह को हलका और उदासीन अवस्था को ढीला नहीँ कर सकेगी, और किसी तरह की समझौती उनके जतन और मेहनत को (वास्ते मन तन से न्यारे होने के) रोक नहीँ सकेगी। उनके दिल के अन्दर यानी अंतर के अंतर फ़िक्र और सोच बैठ गया है और अपनी ताक़त के मुआफ़िक़ जतन और तदबीर से नहीँ चूकते, और तन मन और इंद्रियोँ के भोग उनको दिल से बुरे लगते हैँ और चाहे वक़्त मिल जाने के भोग भी लैँ पर फिर फ़ौरन पछताते हैँ और घबराते हैँ और अपने मन पर बारंबार धिक्कार देते हैँ आगे को बचने के लिये प्रार्थना करते हैँ और अपना ज़ोर भी सतगुर की दया का भरोसा रख कर लगाते हैँ और अंतर मैँ सिवाय एक चाह सतगुर राधास्वामी के चरनौँ के दर्शन की और दूसरी चाह नहीँ रखते और जो दूसरी चाह उठती भी है तो ज़बर और ठहराऊ नहीँ होती, और जब उठती

है तब उसको बुरा समझ कर फ़ौरन रोकते हैं और हटाते हैं और शरमाते और पछताते हैं और उसके बिलकुल दूर होने के लिये प्रार्थना चरनों में करते हैं और सतगुर के चरनों की प्रीत के आगे और कोई प्रीत ज़बर नहीं रखते हैं या बिलकुल नहीं रखते हैं। ऐसे बड़भागी जो जीव हैं वे ज़रूर इसी देह में दर्शन पावेंगे। इस से यह मतलब नहीं है कि वे फ़ौरन धुर मुक़ाम पर जो राधास्वामी धाम है पहुंच जावेंगे, पर यह कि वे ज़रूर मन के घाट से किसी क़दर न्यारे होकर सत्तपुरुष राधास्वामी के चरनों का रस इस क़द्र पाते जावेंगे कि उनको शाँती आ जावेगी और बेकली और निरासता नहीं रहेगी और उनको आगे का रास्ता साफ़ और खुला हुआ दीखने लगेगा और सब अटक और भटक मिट जावेगी और सब बैरी और बिरोधी रास्ते के हार जावेंगे और सतगुर दयाल की मौज उनको मालूम होने लगेगी और फिर कोई तरह का संदेह मन में अपने उद्धार की निसबत नहीं रहेगा और सत्तपुरुष राधास्वामी के चरनों की प्रीत और परतीत इस क़दर गहिरी और गाढ़ी उनको मेहर और दया से हो जावेगी कि फिर उनकी चाह मौज के संग मिल जावेगी। अब इस में भी सतगुरु की मौज है चाहे जिस मुक़ाम तक उनको ले जावें और चाहे जिस मुक़ाम पर रक्खें पर वे

ज़हाँ रहेंगे हज़ूर के चरन और दर्शन के संग रहेंगे और उसी रस और आनन्द में मगन रहेंगे और एक दिन संसार से बे पर्वाह और काल से निडर हो जावेंगे ॥

बचन ४८

सतगुर के चरनों में बिरह और प्रीत लाना और उसको बढ़ाना और उनकी मेहर और दया की परतीत रखना सब को चाहिये। जो कुछ करेंगे वे आप करेंगे। इस जीव की कुछ ताकत नहीं है पर इस के मन में चाह का होना और उसको बढ़ाना और इसी सोच और फ़िकर में रहना और जतन में लगे रहना और तन मन और इन्द्रियों से बच के चलना और नित्त प्रेम और उमंग नवीन उठाना बहुत ज़रूर है और यही निशान सतगुर की मेहर और दया का है। जिसमें यह बातें पाई जावें और जिसको यह बातें प्यारी लगें और जो इन्हीं बातों को प्राप्त करने के सोच और फ़िक्र में रहे तो जानो कि वही मेहरी है और उसका काम वे आप बना रहे हैं और एक दिन उनकी दया से उसका सब काम पूरा हो जावेगा ॥

बचन ४९

जो कोई तन और मन और इन्द्रियों से प्यार रखते हैं और उनके भोग और रस की चाह रखते हैं और

उसको नित्त बढ़ाते हैं और जो वह चाह पूरी हो तो खुश होते हैं और जो पूरी न होवे तो दुखी होते हैं और जो कोई उनके उस भोग के मिलने में या रस लेने में बिघन डाले तो उसको अपना बैरी समझ कर उससे लड़ते हैं और उसको बुरा भला कहते हैं और सतसंग और भजन और सुमिरन और ध्यान ऊपरी करते हैं या वक्त भजन और सतसंग के ऊंघते हैं या सो जाते हैं या गुनावन मन और इन्द्रियों के भोगों की उठाते हैं और यह नहीं जानते कि हम गुनावन में बहते रहते हैं और नित्त तरंगें संसार के बढ़ाने की मन में उठा करती हैं और उन तरंगों में इन्द्री रस और मान रस लेते हैं और उसी में मगन होकर अपने को परमार्थी समझते हैं और यह ख्याल करते हैं कि जो हम कर रहे हैं यही बहुत है और हमारा काम पूरा है ऐसे जीव अभी नीचे की सीढ़ी पर हैं जो सतसंग में पड़े रहेंगे तो आहिस्ता २ सतगुर दयाल की मेहर और दया से उनका भी कारज बनना शुरू हो जावेगा पर अभी उनकी सीढ़ी बहुत नीची है और इसी सबब से उनका मन सतसंग और भजन और ध्यान में नहीं लगता है क्योंकि उनको आदत इन्द्री भोग और मान बड़ाई की पड़ रही है जहाँ यह भोग मिलें सेवा और प्रीत करने को तैयार हो जावें और जब यह भोग न मिलें या कोई तान का बचन कहे

और उनके दोष खोलकर कहे तो रूठ जावें और सतसंग छोड़ने को तइयार हो जावें और सेवा वगैरह सब छोड़ देवें और संत मत पर तान मारें और अनेक तरह के भर्म उठा कर उसको सच्चा न समझें और सुरत शब्द के अभ्यास और सतगुर के ध्यान को भी सट पट और झूँठी बात समझ कर झट पट बे परतीत हो जावें और सतगुर और सच्चे सतसंगियों में बुराई देखें फिर ख़्याल करो कि ऐसे जीवों को परमारथ कैसे मिले। जिस रोज़ भाग से मन सतसंग में लग गया और बचन का रस आया उस रोज़ बड़ी बेकली और घबराहट वास्ते माफ़ी प्रेम और परतीत और भजन के दिखलाने लगे और फिर कुछ नहीं और ज़रा भी फ़िक्र और सोच मन में न बैठा और न मन की हालत को बदला फिर ऐसी बातें बनाने से क्या फ़ायदा बल्कि वे जीव मूरख हैं और सच्चे परमार्थियों की हालत को देखकर सतगुर पर तान मारेंगे कि उन पर तो कृपा करते हैं और हम पर नहीं करते सतगुर के यहाँ भी दुभाँत है और अपनी नालायक़ी को ज़रा नहीं बिचारेंगे और सतगुर को दोष लगावेंगे।

बचन ५०

और मालूम होवे कि तान का बचन ऐसे जीवों पर लगाना या उनका औगुन दिखाना जो ऊपर लिखा है यह है कि जब कोई उनके मन की चोरी खोल देवे

या जो काम वे करते हैं कि जो सच्चे परमार्थी को नहीं करना चाहिये और वह उसको परघट कर देवे या उनको गहरा भोग उनके मन के मुआफ़िक़ उनके इन्द्री रस का न देवे या उस भोग की निंद्या करे या उसको बुरा बतलावे यह बात उनके मन को जला कर तुर्त भड़कावेंगी और कुछ अचरज नहीं कि लड़ने लगें और रूठ कर निंद्या करते फिरें और बेमुख हो जावें और जो कोई उनको मान और इन्द्री रस देवे और उनके मन कीसी बोले और उनकी सेवा वग़ैरह की तारीफ़ करे तो बहुत मगन होकर दूनो सेवा करें और तारीफ़ करने वाले की महिमाँ करें और उसके सेवक बन जावें यह हालतें मन की हैं और बिचारने के लायक़ हैं और किसी का हाल न देखना चाहिये यह सब बातें अपने ही मन पर घटाना और अपने मन की दुरुस्ती करना मुनासिब है और जिसको सच्चा दर्द है वह सिर्फ़ अपनी तरफ़ देखेगा और दूसरे पर तान तो जब मारे जब अपनी घढ़त पूरी पूरी हो गई हो और जब पूरी घढ़त हो जावेगी तब किसी पर तान नहीं मारेगा बल्कि दया और प्यार से समझावेगा ॥

बचन ५१

सब को चाहिये कि हर एक अपने २ मन को निहारे और जो ऐसे सुभाव उसमें होवें जो सतगुर से

मिलने में विघन डालते हों और चरन रस न लेने देते हों उनको हुज़ूर राधास्वामी की दया का भरोसा रखकर आहिस्ता २ दूर करने के जतन में लगे रहना और सब के साथ मित्र भाव और सतगुर के चरनों में प्रेम भाव रखना चाहिये और सतसंग से किसी को हटाना नहीं चाहिये पर उसकी दुरुस्ती सतगुर की मौज और दया का आसरा लेकर प्यार से करना चाहिये और जो न माने तो उसके साथ हठ और ज़िद्द न करना चाहिये और जो बिलकुल अन अधिकारी है वह कोई कारन करके आप ही हट जावेगा ॥

बचन ५२

जो कोई यह कहे कि अंतर में तो गति नहीं और बाहर कोई सहारा मिला नहीं तो कैसे जीव का कारज बने यह बात तो दुरुस्त है। पर बिचार करना चाहिये कि जब तक बाहर सहारा इसके पास मौजूद रहेगा यह कभी अंतर में पूरा पूरा चित्त न लगाएगा क्योंकि आल-सी अंग मन का है जो चीज़ चाहता है आसानी और जल्दी और आराम के संग चाहता है सो जब यह जीव सतगुर के पास मौजूद है तो इसको दरशन और बचन और सतसंग बहुत आसानी और जल्दी के साथ जब २ मन चाहे और तड़प उठे मिल जाता है और उसमें शांती और संतोष हासिल हो जाने पर दूसरी करतूत

को मन में ज़रूरत नहीं रहती है और यह सच है कि जब यह जीव सतगुर के पास मौजूद होता है तो उस वक़्त मुनासिब है कि जिस क़दर बने उन की सेवा और सतसंग और दर्शन करे भजन को उस वक़्त में गौन रक्खे और उनके ही चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ावे और जब कि उसकी प्रीत पक्की और सच्ची हो जावेगी तो फिर भजन भी सहज हो जावेगा और जब संत सतगुर से अलग हुआ तब उसको आदत के मुआफ़िक़ जल्दी दर्शन चाहिये नहीं तो घबराहट होती है मन पर ज़ोर देकर अंदर में लगाने में उसको तकलीफ़ होती है और जो लगता है तो फ़ौरन दर्शन चाहता है और नहीं तो छोड़ देता है सो यह बात दुरुस्त नहीं है क्योंकि सतगुर ने पहिले अपने सरूप में प्रीत लगवाई और उसमें पकाया और जब देखा कि यह उसमें किसी क़दर ठहर गया अब उसको अंतर में लगाना चाहते हैं सो यह बचन कोई २ जीव कम मानते हैं पर जो अधिकारी हैं वह सहज में भजन में लग जाते हैं और अंतर का रस लेते हैं ॥

बचन ५३

मन की आदत है कि एक काम जिस तरह से करता आया है वैसेही उसको बिना तकलीफ़ के कर सक्ता है और जो उसमें कुछ उलट पलट होवे तो घब-

राता है। सतगुरु के आगे यह मन अपनी आदत के मुआफ़िक़ बाहर सीधा चलता है याने बाहर एक चित्त होकर दर्शन करता है और बचन सुनता है और जब कि सतगुर से जुदाई हुई तो बग़ैर उलटे पलटे अंतर में कैसे दर्शन मिले ज़रूर इसमें थोड़ी देर लगेगी और कोई दिन मेहनत और रगड़ सच्ची करनी पड़ेगी पर इस काम में यह मन आलस करता है और टूट कर मेहनत नहीं करता है। जो कोई दिन सब्र और धीरज करके प्रीत सहित इस काम में लगा रहे तो ज़रूर दर्शन का रस अन्तर में मिले। असली दर्शन तो बहुत दूर है पर चरन सब जगह मौजूद हैं चरनों के रस का सहारा बड़ा भारी है जो ज़रा भी रस मिले तो वह भी दर्शन से कुछ कम नहीं है और जहाँ चरन हैं वहाँ दर्शन भी मौज से मौजूद हैं॥

बचन ५४

ज़ाहिर है कि कितनी मेहनत और तकलीफ़ और देरी से दुनिया की विद्या और सामान हासिल होते हैं और दुनिया की चाहें कोई २ तकलीफ़ से किसी क़दर पूरी होती हैं। ऐसे ही परमारथ में भी परतीत और धीरज के साथ दया का भरोसा करके चलना चाहिये और निश्चय धरना चाहिये कि ज़रूर मेहर आवेगी और रस देवेगी॥

बचन ५५

बाहर के आसरे का बहुत ख़याल न रखना चाहिये केवल इतना ही बहुत है कि स्वरूप की याद और उस की लीला का ख़याल आता रहे और चरनों में प्रार्थना करके उस स्वरूप को जिस क़दर हो सके अंतर में परघट करे क्योंकि जो सतगुर का स्वरूप देहवाला पास नहीं है तो असली चेतन रूप जो घट में मौजूद है वह तो निकट है जब यह निश्चय है कि सतगुर राधास्वामी दयाल हर एक के संग अन्तर में मौजूद हैं तो फिर मेहनत करना ज़रूर चाहिये इस आसा पर कि उनका स्वरूप एक दिन घट में प्रगट होगा और चरन रस और शब्द रस तो थोड़े ही दिनों में मिलना शुरू हो जावेगा ॥

बचन ५६

सब तरह के बचन हजूरी पोथी में मौजूद हैं केवल अंतर में धीरज और निश्चय के संग कोई दिन मेहनत करना चाहिये। पहिले थोड़े दिन तक तो तार लगा कर सुमिरन ध्यान और भजन करो और देखो कि हजूर राधास्वामी कुछ न कुछ मेहर से सहायता करते हैं कि नहीं। दो चार महीने कुछ बहुत नहीं हैं बल्कि बहुत जल्दी है जिसको सच्ची चाह है वह तो मगन होकर अन्तर में ज़ोर लगाना शुरू करेगा। फिर नहीं

मालूम उसपर कितनी जल्दी दया हो जावे यानी जिस क़दर मन और सुरत सफ़ाई से चलेंगे उतनाही जल्दी रस मिलेगा यानी जितनी बासना और तरंगें संसारी कम होंगी उतनी ही परमारथ की चाह ज़बर होगी और उतनाही अन्तर में सफ़ाई और आसानी से लगेगा और उसी मुआफ़िक़ जल्दी आनन्द और रस मिलेगा। मियाद छः महीने की जो लिखी गई है वह अंदाज़न् लिखी गई है पर सतगुरु राधास्वामी दयाल अपनी मौज और मेहर से चाहे कई महीने में और चाहे कोई दिन में जैसा जिसका अधिकार होवे उसके मुआफ़िक़ उसको आनन्द और रस अपने चरन कंवल का बख़्शेंगे और चरन कंवल कहने में तीनो रस यानी स्वरूप और नाम और शब्द के शामिल हैं॥

बचन ५७

बाज़े जीव मेहनत तो करना नहीं चाहते और न अपने मन और इन्द्रियों को फ़ुज़ूल भोगों की तरफ़ से हटाते हैं और न अपनी चाल चलन दुरुस्त करते हैं और न फ़ुज़ूल चाहें दूर करते हैं। सिर्फ़ मेहर और दया माँगते हैं सो यह माँगना तो बुरा नहीं है पर इस क़दर ख़्याल करना चाहिये कि जब तक यह जीव थोड़ी बहुत कोशिश वास्ते अपनी अन्तर की सफ़ाई के

यानी कम करने भोगों की चाह के और ख़राब न खोने अपने वक़्त के सचाई से न करेगा तब तक मेहर का प्राप्त होना मुश्किल है ॥

बचन ५८

बहुत घबराहट बाहर की मुनासिब नहीं है इसमें अन्तर का जोश कम होता है। घबराहट को भी जब उठे और जिस क़दर बन सके अंतर में फेरो अगर रोना आवे तो अन्तर में ऊपर की तरफ़ मन को खैंचो और रोओ और ऐसी हालत में जो बाहर की तरफ़ भी आँसू निकलें तो कुछ हर्ज नहीं है क्योंकि जब वह धारा ज़बर है तो किसी क़दर बाहर भी फैल जावे तो उसमें ज़ियादा हर्ज नहीं होगा फिर हर हाल में यानी वक़्त बिरह और बेकली और घबराहट और तड़प और दर्द के अपनी सुरत और मन और दृष्टी और ख़्याल को ऊपर की तरफ़ अन्तर में चरनों में खैंच कर लगाना शुरू करो और इसी तरह चन्दरोज़ करके देखो कि हुज़ूर राधा-स्वामी कैसी दया फ़रमाते हैं इसके हासिल करने के वास्ते ज़रा मेहनत और धीरज थोड़े दिन का चाहिये फिर जल्दी फल उसका प्रगट होगा ॥

बचन ५९

अभी जीव इस लायक़ नहीं हैं कि उनकी सुरत और मन चढ़ाये जावें क्योंकि सफ़ाई अन्तर की अच्छी

तरह नहीं हुई है। जो ज़रा भी अन्तर में गहरा आनन्द और रस मिल जावे तो फिर या तो चारपाई छोड़ने का इरादा न होगा या और तरह की तरंगें जीवों के उपकार के निमित्त उठावेंगे और कहेंगे कि अपने गुरू का नाम प्रगट करना चाहिये और फ़लाने को चिताना और फ़लाने को खैंचना चाहिये और हाल यह है कि अभी मन में मान और आदर की चाह भरी हुई है यह सब बातें जो मन बनाता है सब में यह अपना मान और आदर चाहता है और जो इसको इन कामों का मौक़ा मिल जावे तो अचरज नहीं है कि चौरासी में जाने का काम करे। याने स्त्री और धन और आदर और मान के समुन्दर में बह जावे और गोते खावे और औरों को भी ले डूबे और जो कोई हित करके समझावे या कुछ कहे तो उसको बैरी देखे और यह कहे कि इसको मेरी ईरषा है इस सबब से यह मेरी बुराई दिखलाता है और यह ख़बर नहीं कि उपकार के काम किस निमित्त कर रहा है सिर्फ़ मान भोग और इन्द्री भोग और आदर भोग के लिये न कि सतगुर की निर्मल सेवा के लिये। क्योंकि जो ऐसा हाल होता तो मन पर सवार होता कभी क़िसी के कहने का बुरा न मानता और सब से हित और प्यार करता और मान बड़ाई और अस्तुत से अपना बचाव करता और अपने तईं

पुजवाने से राज़ी न होता और दासता का अंग न छोड़ता पर क्या करे ज़रासा रस आया था सो ले उड़ा और जो सम्हल कर न चला तो आगे की तरक़्क़ी का रास्ता बन्द होने का डर है ॥

बचन ६०

इस वास्ते बिचारना चाहिये कि पहिले सब तरह से अपने मन की सफ़ाई करना ज़रूर है ताकि कोई बासना संसारी या परमारथी बाहर के कामौं की इस मन मैं बाक़ी न रहे और परीक्षा करके अपनी जाँच करना चाहिये कि धन और माया के पदारथ और स्त्री और इन्द्री भोग और मान बड़ाई और अस्तुति और आदर हमको बेहोश और ग़ाफ़िल कर देते हैं या नहीं। जो मन ज़रा भी इन पदार्थौं की तरफ़ झुके और उनकी प्राप्ती मैं मगन होवे और उन पदारथ वालौं का संग करने को तइयार होवे तो जानो कि अभी घट मैं चोर बैठा है इस वास्ते अभी सफ़ाई करे जाओ और मन से लड़े जाओ जल्दी मत करो सतगुरु राधास्वामी दयाल का सहारा लेकर अन्तर मैं कोशिश जारी रक्खो और अपनी २ हालत को आप परखते चलो दूसरे की बात को ज़रा मत मानो अस्तुत करने वालौं को अपने हाल की तो ख़बर ही नहीं है फिर दूसरे की महिमाँ क्या जानैंगे यह हाल सतगुरु जानैं या वह जिसको वे अपनी

दया से परख की आँख बख़्शें या जिसको वे अपनी दया से जतावें और नहीं तो यह मन बावलों और अन्धों के मुआफ़िक़ अन्धाधुँध चलता है और बोलता है और अपने को आप ही बड़ा मानता है और मूरखों की अस्तुत पर गुमान करके ख़ुश होता है और इस तरह अपना रास्ता आप बन्द कर लेता है। जो सतगुर दयाल सिर पर हैं तो वे इसको जब तब टक्कर और चक्कर देकर हुशियार करते रहेंगे और मेहर से बचाते रहेंगे और नहीं तो कुछ ठिकाना नहीं है। इसवास्ते जल्दी मत करो और घबराओ मत और अपने मन की दसा परखते हुए चलो जो मन की दशा परखते हुये चलोगे तो जल्दी की घबराहट आप जाती रहेगी और जैसे २ उसकी सफ़ाई और दुरुस्ती देखते जाओगे उसी क़दर हज़ूर राधास्वामी दयाल की दया की परतीत आती जावेगी और वह दिन २ बढ़ती जावेगी और इसी तरह सब काम दुरुस्त हो जावेगा॥

बचन ६१

बाहर के सहारे की प्रीत और परतीत तो ज़रूर चाहिये पर सतगुर के स्वरूप और शब्द और दया को अन्तर में भी प्रगट करना चाहिये और अन्तर ही में इस को ढूँढना और खोजना और अंतर ही में उससे मिलने की गहरी चाह रखना चाहिये तब मन

आहिस्ते २ अपनी आदत को छोड़ कर अन्तर में थोड़ा बहुत जतन करेगा और उसका फल भी हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया और मेहर से उसको मिलता जावेगा। कोई दिन मेहनत और तकलीफ़ होगी फिर हमेशा को आराम हो जावेगा इस वास्ते इस तकलीफ़ को बरदाश्त करने का इरादा करना चाहिये और हुज़ूर राधास्वामी दयाल की मेहर और दया का भरोसा दृढ़ रखना चाहिये ॥

बचन ६२

सब कारज हुज़ूर राधास्वामी दयाल आप कर रहे हैं और सब का काम आप पूरा करेंगे कोई अपने मन में निरास न होवे जैसा तैसा जो कोई उनका है यानी जिस क़दर जिसने उनके चरनों की सरन ली है उनको सब का ख़्याल है और सब का काम थोड़ा या बहुत जैसा होता है आप बनाते जाते हैं और एक दिन सब को ज़रूर अपने चरनों में पहुँचावेंगे और वहाँही रक्खेंगे पर उनका सच्चा दास हो जाना चाहिये और जिस क़दर हो सके उनके चरनों में उनकी दया का बल लेकर दीनता के साथ गहरी प्रीत करना चाहिये और किसी संसारी बल का भरोसा नहीं रखना चाहिये ऐसी सच्ची प्रीत और दीनता का नाम सरन है यानी मन को अपने अन्तर में सब से हटा कर एक हुज़ूर राधास्वामी

दयाल के चरनों का बल और भरोसा रक्खे और बाहर के सहारों का भी थोड़ा बहुत ख्याल मुआफ़िक़ दस्तूर दुनिया के रक्खे और बाहर से उनका निरादर न करे ॥

बचन ६३

बिरह और बेकली रास्ता खोलने वाली और साफ़ करने वाली है जिन २ को राधास्वामी दयाल ने ऐसी हालत दी है या आगे देवें वह अपने बड़े भाग समझें कि हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी ख़ास बख़्शिश देने के लिये उनकी गढ़त कर रहे हैं और ख़ास बख़्शिश हुज़ूर राधास्वामी दयाल की यही है कि चरनों में गहिरा प्रेम और आनन्द आवे। यह बड़ी भारी दौलत है जिसको यह मिली या मिलेगी वही निश्चिन्त हो जावेगा और यह प्रेम ऐसा होना चाहिये कि जब चाहें चरनों में चित्त जोड़ कर थोड़ा बहुत रस हासिल कर सके और शांती को प्राप्त होवे इस वास्ते इस बेकली और घबराहट को बुरा जानना नहीं चाहिये और अपने भाग को और सतगुरु की दया को परखना और उनका गुन गाना चाहिये ॥

बचन ६४

और जिस किसी को यह बात हासिल नहीं है यानी बिरह और बेकली नहीं है उसको चाहिये कि इसके लिये प्रार्थना करे इस से सफ़ाई मन की जल्द

होगी और जो थोड़ी प्रीत हजूर राधास्वामी दयाल के चरनों में हासिल है वह निर्मल और पक्की और सच्ची अन्तर में हो जावेगी। बारम्बार यह समझना चाहिये कि बिरह और बेकली भारी दात है इसके बिना सारे जगत के परमार्थी मारे २ और ख़ाली फिरते हैं जो बिरह और बेकली पैदा होवे तो उसका शुक्र करना चाहिये और दिन २ चरनों में प्रेम बढ़ाना चाहिये और इस बेकली के साथ दया लगी हुई है क्योंकि इसका और उसका संग है और फिर ज़रूर प्रेम की बख़्शिश होती जावेगी॥

बचन ६५

मन का हाल बड़ा ज़बर है सतगुर की दया का भरोसा चाहिये वे सब तरह कारज बनावेंगे और जीव को सच्चा परमार्थी कर देंगे और किसी जतन से काल और करम को जीतना किसी का काम नहीं है। यह तो केवल संत सतगुर से डरते हैं और सतगुरु ही उन पर सवार हैं और बाक़ी सब लोग उनके ग़ुलाम हैं इस वास्ते सतगुर की दया से बेड़ा पार होना सब तरह मुमकिन और आसान है और वेही सच्ची प्रीत और परतीत बख़्शेंगे और अपनी कृपा से मंज़िल पर पहुंचावेंगे। पर सेवक को चाहिये कि सतगुर के बचन

को चित्त से सुने और समझे और जहाँ तक हो सके उनके अनुसार कारखाई करे।

बचन ६६

हजूर राधास्वामी दयाल की दया कुल्ल पर निहायत गहरी और अपार है पर जो कोई देखे और परखे उसको मालूम हो सक्ती है या जिसको वे आप अपनी दया से दिखावैं और परख देवैं वह देख सक्ता है हजूर राधास्वामी की गत अगम और अपार है जीव की समझ और बुद्धि जो साथ काम और क्रोध और संसारी अंगों के लिपटी हुई है क्या ताक़त रखती है कि कुछ भी परख सके। कभी २ जो ऐसी मौज और दया हो जाती है और कुछ २ और किसी २ बात की ख़बर पड़ जाती है सो इसकी भी सम्हाल जैसी कि चाहिये नहीं हो सक्ती हजूर राधास्वामी दयाल आपही जैसा मुनासिब है जीवों का निरबाह करते हैं॥

बचन ६७

ज़रा बिचार करने से मालूम होगा कि मन में अभी अंधाधुंध कीचड़ काम और क्रोध और लोभ और मोह और मान और बड़ाई की भरी हुई है यह जीव अभी इस लायक़ नहीं है कि हजूर राधास्वामी दयाल की दया लेवे पर वे अपनी कृपा से बेड़ा पार लगावैंगे। जो सच्च कहा जावे तो इसका नाम समझ, बूझ नहीं

कह सक्ते हैं कि जानना और फिर भूल में पड़ना यह ऐसा है कि अँधेरे में कुछ चमक आई और कुछ देखा गया और फिर जब अँधेरा हो गया अंधों की तरह उन्हीं झगड़ों में भूल गया यही मन का हाल है चाहे कोई परतीत करे या नहीं और जब तक यह हालत मन की है और संसारी चाहें उसके अन्तर में बस रही हैं और उनकी आसा अन्तर में धरी है तो यह निर्मल परमार्थी अंग नहीं हो सक्ता है यह तो संसारी अंग है और इसी सबब से दया में भी देर है ॥

बचन ६८

हर एक को मुनासिब है कि अपने हाल की नित्त परख करता जावे क्योंकि जीव ऐसी हालत और जगह में पड़ा है कि जहाँ कीचड़ की दलदल है और उसमें किसी क़दर फँसा रहता है। हज़ूर राधास्वामी दयाल ही अपनी दया से बचावेंगे और किसी तरह गुज़ारा नज़र नहीं आता है और ऐसा ही हाल मन का भजन और सतसंग के वक्त समझ लो पर उसमें दरजे हैं किसी को वक्त सतसंग के भी तवज्जह और सफ़ाई हासिल नहीं होती तो भजन के वक्त बिलकुल सफ़ाई होनी बहुत मुश्किल है पर जिन पर दया है उनको दिन २ सफ़ाई और तवज्जह अन्तरी हासिल होती जावेगी ॥

बचन ६६

और मालूम होवे कि भजन और सतसंग और ध्यान में इस मन को अभी ऐसा रस नहीं आता है जैसा कि इन्द्रियों के भोगों में, इसी सबब से परमारथ में कच्चा और ढीला रहता है और संसार में सच्चा और पक्का पर आहिस्ता २ जिस २ पर कि मेहर है उनको सतगुर दयाल राधास्वामी आप सम्हालेंगे और जब तब अपने दर्शन और ज़रा २ .क़ुदरत दिखलाते हुए और संसार और भोगों से डराते हुए इस जाल से निकाल लेवेंगे क्योंकि जब कभी कुछ अन्तर में ज़रा सा प्रकाश हो जाता है तो कई दिन को उसका ख्याल और उसके सबब से संसार का डर रहता है और जहाँ कुछ दिन गुज़रे और ग़फ़लत आई तब फिर भूल जाता है पर हज़ूर राधास्वामी दयाल हैं वे थोड़े दिन ऐसी भूल को बरदाश्त करके फिर ज़रा सा इशारा अपनी दया का कर देते हैं तब फिर होश आ जाता है और अपने किये पर शरमाता है और पछताता है और इरादा करता है कि अब न भूलूँगा पर फिर भूल पैदा हो जाती है सबब इसका यह है कि यह अभी भूल और ग़फ़लत के अस्थान पर बैठा है और आहिस्ता २ वहाँ से हटाया जाता है इसी तरह कुछ दिनों में जब किसी क़दर उस ग़फ़लत के अस्थान से दूरी हो जायगी तब भूल भी कम होती

जायगी और जो रस कि हजूर राधास्वामी दयाल उसको कभी २ अपनी दया से दिखावेंगे उसकी याद ज़ियादा रहती जावेगी फिर भूल जो आवेगी भी तो बहुत कम ठहरेगी और हुशियारी बढ़ती जावेगी। हुशयारी से मतलब यह है कि सतगुर की याद या उनकी कुदरत और दया की याद और खौफ़ गफ़लत का रहा आवे सो यह हुशियारी हजूर राधास्वामी दयाल की दया से पैदा होती जावेगी और आगे को बढ़ती जावेगी इसमें जल्दी नहीं करना चाहिये जो जल्दी यह बात ज़ाहिर होगी तो फिर जो जो काम कि अब लिये जाते हैं उनमें फ़र्क पड़ेगा कुछ दिन सबर करना मुनासिब है। हजूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से सब तरह जल्दी आप कर रहे हैं और जब हजूर राधास्वामी दयाल की दया को अच्छी तरह परखोगे तो यह भी हाल कि क्यों इस क़दर देर होती है खुल जावेगा और उसकी मसलहत सब मालूम हो जावेगी॥

बचन ७०

हजूर राधास्वामी बड़े दयाल हैं और बड़े कारज करता कि जिसका बर्नन नहीं हो सक्ता है ऐसी दया कभी किसी ने नहीं करी क्योंकि बाहर से संसारी कामों में बरताव कराना और अन्तर में परमारथी काम बनवाते जाना यह ताक़त सिर्फ़ पूरन दयाल और सर्व

समरथ पुरुष की हैं बल्कि सोते वक़्त भी ख़ास दयापात्रों पर ख़ास मेहर सुर्त और मन को चढ़ाई की करते हैं ॥

बचन ७१

हजूर राधास्वामी दयाल की दया यह चाहती है कि सब को पार लगावे जो कोई चाह नहीं करते उनको जीते जी चाहे कुछ न मालूम पड़ें पर दुरुस्ती उनकी भी जारी है ताकि अन्त समय पर आसानी से काल और माया के जाल से निकाल लिये जावें क्योंकि हजूर राधास्वामी दयाल को सब जीवों की जो उनके चरनों में आये हैं लाज है चाहे वे आप अपना फ़िकर करें या न करें। हजूर राधास्वामी दयाल हर एक की जैसी २ मुनासिब और ज़रूरी है सफ़ाई अन्तर की आप ही करते हैं ॥

बचन ७२

और जिनके हिरदे में दर्शन की अभिलाषा तेज़ है उन पर बिशेष दया होती जाती है याने उनको आहिस्ते २ अपनी लीला और दर्शन दिखाते जाते हैं और उनके सुर्त और मन की सफ़ाई करके ऊपर को खैंचते और चढ़ाते जाते हैं ताकि वे जीते जी कुछ तमाशा और सैर अन्तर की करें और अपना उद्धार आप अपनी आँख से देख लें ऐसे लोगों को अलबत्तः प्रीत और परतीत चरनों में ज़ियादा से ज़ियादा होगी और दूसरों

को मामूली तरह पर। पर प्रीत और परतीत सब की हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से बढ़ाते जाते हैं और अन्त समय से पहिले उनकी थोड़ी बहुत दुरुस्ती कर लेंगे॥

बचन ७२

जो बचन ऊपर लिखे गये हैं वह सब सही और दुरुस्त हैं पर जिस किसी की जिस क़दर सुरत और मन ऊँचे चढ़ते जावेंगे उसी क़दर कैफ़ियत उसको नज़र आती जावेगी और इन बचनों की सचौटी और ज़रूरत की भी उसको ख़बर पड़ती जावेगी और हुज़ूर राधास्वामी दयाल की महिमा भी चित्त में समाती जावेगी और हुज़ूर राधास्वामी दयाल की बानी की भी क़दर मालूम होती जावेगी कि कैसी ऊँची और गहरी है कि आज तक किसी सन्त ने ऐसी बानी नहीं कही पर यह हाल बग़ैर गहरे अन्तरमुख हुए मालूम नहीं पड़ सकता है और इसी सबब से हुज़ूरी बानी में मन कम लगता है क्योंकि उसका रस बड़ा गहरा है जब सुरत और मन को थोड़ा अन्तर में धसा कर और बाहर से ख़ूब समेट कर बानी को सुनें तब पूरा २ रस उस बानी का आवे सो यह हालत कभी २ हो जाती है जो किसी को हमेशा प्राप्त होवे तो उसके बड़े भाग जानना चाहिये क्योंकि फिर उसके मन और सुरत भी गहरे अन्तरमुखी हो

जावेंगे और दुनिया की तरफ़ तवज्जह कम होती जावेगी ॥

बचन ७४

जो हुज़ूर राधास्वामी दयाल कभी २ अपनी दया से रस देते हैं इसका शुकराना अदा नहीं हो सक्ता है और इसी तरह गहरी प्रीत और परतीत आहिस्ते २ होती जावेगी और मन और सुरत भी अन्तर में धसते जावेंगे। यह काम जल्दी का नहीं है आहिस्ते २ में बड़ा फ़ायदा है और बड़ी मसलहत है और बड़ा रस है जल्दी में बेहोशी और ग़फ़लत दूसरी तरह की पैदा हो जाती है फिर जब कि सतगुर और उनकी मेहर और लीला की ख़बर न पड़ी तो क्या फ़ायदा हुआ इस लिये ज़ियादा घबराहट नहीं चाहिये हरदम हुज़ूर राधास्वामी को पिता दयाल और रक्षक समझो और जो वे अपनी मेहर से करावें वह करे जाओ और भरोसा दृढ़ उन की दया का रक्खो वे एक दिन सब काम पूरा करेंगे और किसी तरह किसी को जो उनके चरनों में आया है ख़ाली नहीं रक्खेंगे ॥

बचन ७५

सच्चे प्रेमी से जो कुछ हो रहा है और जो कुछ वह कर रहा है सब मौज से है इसमें मसलहत है जो उसका थोड़ा दुनिया के काम में मन न लगे तो निहायत

तकलीफ़ होगी। हुजूर राधास्वामी दयाल जब चाहेंगे जब एक छिन में उसको न्यारा कर लेंगे सच्चे प्रेमी का कुछ हर्ज नहीं है उसको एक बचन में चेत हो सक्ता है और एक बचन में वह खिच सक्ता है और गोकि अभी परमारथ की गहरी हालत देने में देर है इस सबब से उसको थोड़ा काम संसार और परमारथ का दे रक्खा है नहीं तो उसका शौक़ बहुत तेज़ है जो उधर तवज्जह करे तो बहुत जल्दी मचावे और ज़ियादा घबराहट दिलावे और ऐसी हालत घबराहट और तकलीफ़ की उसको देने की मौज नहीं है वह सब तरह साफ़ और तैयार है वक़्त पर सब दुरुस्ती फ़ौरन हो जावेगी उसकी बाहरी हालत पर नज़र न करना चाहिये अन्तरी प्रीत और परतीत की हालत देखना चाहिये सो उसमें कोई कसर नहीं होगी एक छिन में सब बखेड़ों को पटक देवेगा और जब तक कि ऐसा वक़्त आवे इस दुनिया के काम में भी उसके हाथ से किसी क़दर जीवों का परमारथी उपकार बनेगा–यह परतीत करना चाहिये कि जो ख़ास हुज़ूर राधास्वामी दयाल की सेवा में हैं उनका किसी तरह हरज नहीं होगा चाहे वे कहीं और किसी काम में लगे रहैं किसी तरह का बिगाड़ न होगा दया की मौज उनके अंग संग है और उनकी चढ़त सब तरह सतगुर दयाल आप कर रहे हैं और जिनके

हिरदे में तलब और तड़प सच्ची वास्ते दरशनों के है वही ख़ासों में हैं उनकी रक्षा और ख़बरगीरी हुज़ूर राधास्वामी दयाल आप कर रहे हैं और सब तरह उनका काम आप पूरा करेंगे ॥

बचन ७८

हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया बहुत है और सब की बढ़त जारी है और जो ख़्याल दिल में पैदा होते हैं उनकी निसबत साफ़ २ यह नहीं कहा जा सक्ता है कि सब मौज से ही पैदा होते हैं बाज़े मौज से हैं और बाज़े मन की तरंग में भी दाख़िल हो सक्ते हैं और इसका निरनय हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया से चाहे ख़्याल उठने के वक़्त और चाहे थोड़े दिनों के पीछे मालूम हो सक्ता है और यह भी दुरुस्त है कि सब बातों में मौज के जताने की मसलहत नहीं है बाज़ में मौज मालूम पड़ती है और बाज़ में मन को शक रहता है और बाज़े काम बग़ैर सोचने और ख़्याल करने के हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी मौज और दया से दुरुस्त कर देते हैं या करा लेते हैं। हुज़ूर राधास्वामी दयाल की मेहर और दया अपार है चरनों में ज़रा भरोसा रख कर लगे रहो और सैर देखते जाओ कि कैसे २ जीव का बेड़ा पार करते हैं अनन्त लीला और अनन्त मौज

और अपार कुदरत हजूर राधास्वामी दयाल की है॥

बचन ७७

जिस किसी साधू की दूसरे साधू के साथ या सतसंगी की दूसरे सतसंगी के साथ हद्द से ज़ियादा प्रीत हो जावे कि जिस्से राधास्वामी के चरनों की प्रीत में खलल पड़े तो उसको समझा कर कम कराना चाहिये पर जल्दी न करना चाहिये और न ज़ियादा दबाव डालना चाहिये क्योंकि जब तक थोड़े दिन तकलीफ़ की बरदाश्त न करी जायगी तब तक वह प्रीत कम न होगी। साधारन प्रीत आपस में साधू और सतसंगियों के रहना मुनासिब है और ज़ियादती में तकलीफ़ और नुक़सान होता है॥

बचन ७८

ज़ियादा ज़ोर हजूर राधास्वामी दयाल के स्वरूप के ध्यान और अंतरी सुमिरन नाम पर देना चाहिये और जिस किसी की प्रीत किसी के साथ मामूली से ज़ियादा है तो वह अंतर में सतगुर के स्वरूप के परघट करने में क्यों नहीं ज़ोर देता है बाहर की पकड़ दूसरे आदमी में इस क़दर क्यों मज़बूत करता है जिस में तकलीफ़ होवे और जब सतगुर आप मौजूद हैं वह भी यह बात नहीं पसंद करते कि किसी जीव की ज़ियादा पकड़ उनके बाहर के स्वरूप में होवे। पहिले चरनों में लगाने के वास्ते यह तज़-

बीज़ की जाती है कि बाहर का प्रेम और शौक़ बख़्शा जाता है और जब किसी क़दर लग गया तब अंतर मेँ भी धसाने की मौज है चाहे कोई नया जीव भी है पर वह भी जिस क़दर जल्दी अंतर मेँ धसने का इरादा करे उसी क़दर जल्दी फ़ायदा होगा और अख़ीर को काम अंतर के स्वरूप से सब को पड़ेगा इस सबब से चाहिये कि सतगुर के बाहर के स्वरूप को अंतर मेँ प्रगट करो सो आहिस्ते २ होगा जल्दी नहीँ। और बाहर के स्वरूप मेँ इस वास्ते पहिले प्रीत ज़ियादा लगाई जाती है कि उस प्रीत के आसरे संसारी स्वरूपों और पदार्थों से थोड़ा बहुत हट कर सतगुर के स्वरूप को अंतर मेँ प्रगट करके और जो अंतर मेँ जल्दी प्रगट न होवे तो उसका अस्थान २ पर ख़्याल और उनमान करके उसमेँ ऐसा लगे कि उसके सहारे से अंतर मेँ दरजे बदरजे चढ़ता जावे। तब एक रोज़ असली पद को पावेगा। मतलब यह कि सतगुर राधास्वामी दयाल ही के स्वरूप को अंतर मेँ प्रगट करके उसमेँ प्रीत लगानी चाहिये। चढ़ने मेँ सतगुर का स्वरूप मदद देगा और किसी के स्वरूप को अंतर मेँ प्रगट कर के उस मेँ प्रीत लगाने से चढ़ने मेँ मदद नहीँ मिलेगी। अंतर के मुक़ामी स्वरूप के ध्यान करने से किसी क़दर सहारा मिलेगा पर जैसी तरक़्क़ी और

चढ़ाई सतगुरू या साधगुरू के स्वरूप के ध्यान से सहज मैं हो सक्ती है वैसी तरक्की दूसरे किसी के स्वरूप के ध्यान से नहीं हो सक्ती है पर शर्त यह है कि जिस स्वरूप का यह ध्यान करे उस मैं थोड़ा बहुत प्रेम होना चाहिये। नहीं तो ध्यान दुरुस्ती से नहीं बनेगा यह हाल सतसंग और अभ्यास के करने से मालूम हो सक्ता है पर यह बात उसी को मालूम पड़ेगी जो सच्चा प्रेमी है और आप साध बनना चाहता है ॥

वचन ७६

मन एक अंडे के मिसाल है एक सिरा उस का ऊँचे की तरफ़ और एक सिरा नीचे की तरफ़ है एक धार ऊपर के लोक मैं से आकर उस मैं समाती है और नीचे की तरफ़ से धारैं निकल कर पिंड मैं फैलती हैं और जब से जीव पिंड मैं आया है तब से धारा का ऊपर से आना और पिंड मैं फैलना शुरू हुआ है। जो जीव कि जल्दी वास्ते उद्धार के करते हैं सो हो सक्ता है क्योंकि सतगुर समरथ हैं वह अपनी मौज से कर सक्ते हैं पर जो कि उस धारा को पिंड मैं उतरते कितने ही बरस का अरसा हो गया है और सतगुरू और सतसंग मिला नहीं तो कैसे एकायक ऊपर को उलटे और जब तक ऊपर को उलट कर कुछ भी कैफ़ियत और मज़ा उस सिंध का जहाँ से वह धारा आई है नहीं देखे तब तक

उद्धार के होने का पूरा निश्चय नहीं हो सक्ता है सो यह बात जब तक अपने वक़्त के सतगुरु नहीं मिलेंगे और उनके सतसंग में यह जीव दीन होकर नहीं जावेगा और उनके हुक्म के मुआफ़िक़ अमल नहीं करेगा हासिल नहीं होगी और तब तक उलटना उस धारा का जोकि बहुत दिनों से उतरती आई है नहीं हो सक्ता है। अब बिचारो कि वक़्त के सतगुर की किस क़दर ज़रूरत है पिछलों की बानी से गवाही मिल सक्ती है पर जुगत उलटने धार की वक़्त के ही सतगुर से मिलेगी क्योंकि ग्रंथों में यह जुगत साफ़ २ नहीं लिखी है॥

बचन ८०

जीव भी पिंड में बैठा है और इसका मालिक भी पिंड में मौजूद है कहीं बाहर इसको तलाश करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि इस जीव को इस संसार में आये बहुत अरसा गुज़र गया है और माया के पदार्थों में लिपट कर अपने मालिक से गाफ़िल हो गया है अब जो इसको सतगुर का संग मिले और उनके बचन चित देकर सुने और तवज्जह के साथ समझे और जो जुगत वह बतावें उसका अभ्यास करे तो एक दिन मालिक का दर्शन इस पिंड में मिल सक्ता है॥

बचन ८१

अपने आप में जो स्वरूप सतगुर का है उससे सब को

काम पड़ेगा पर जैसे बने और जिस क़दर हो सके अन्तर में थोड़ा बहुत रस लेने की आदत मन को डालना चाहिये। जिस वक़्त यह जीव सतगुर के सन्मुख होता है उसके मन की बितीं और सुरत सिमट कर एक हो जाती हैं और इसी सबब से उस को अन्तर में रस मिलता है और आनन्द भी आता है इसी वजह से सतगुर से अलग होना नहीं चाहता है क्योंकि उनके आगे उसका यह काम आसानी से बनता है और अकेले में थोड़ी दिक़्क़त पड़ती है पर जैसे हो सके वैसे अकेले में भी अपने मन और सुरत को समेटना चाहिये। जब किसी अस्थान पर आखों से ऊपर वह सिमट जावे और ठहर जावे तो थोड़ा बहुत अंतर में रस ज़रूर मिलेगा पर समेटने में ज़रा दिक़्क़त और तकलीफ़ होती है और सतगुर के आसरे आसानी से सिमट जाते हैं क्योंकि उनमें भाव और प्रीत है और उनके दर्शन के असर से जल्द सिमटाव होता है॥

बचन ८२

इस जीव की हजूर राधास्वामी दयाल आप ख़बर रखते हैं और अपनी दया से सुरत को चढ़ाते जाते हैं। और मन माया भी रास्ते में अटकाव करते जाते हैं सो वह अटक हजूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया का बल देकर तुड़वाते जाते हैं इसी के हाथ

से सब काम कराते हैं पर असल में कर्ता आप हैं ॥

बचन ८३

जो जुगत कि इस जीव के वास्ते प्राप्त करने प्रीत अन्तर के सतगुरु ने बताई है वह बहुत भारी है एक ही रोज़ में या थोड़े ही दिन में हालत नहीं बदल सक्ती पर यह जुगत ऐसी है कि जो थोड़ी बहुत जिस क़दर बने हर रोज़ करे जावे तो कुछ दिनों में हालत बदलनी शुरू होगी। यह काम एक या दो दिन का नहीं है सतगुरु अपनी मेहर से आहिस्ते २ काम बनावेंगे घबराहट और जल्दी हद्द से ज़ियादा नहीं चाहिये। जो प्रीत बाहर में एक मन है तो वह अन्तर में एक छटाँक की बराबर होती है अस्थूल का खेल और है और सूक्ष्म का और। जीवों को अन्तर में सहारा देने के वास्ते यह जुगत बताई गई है इस जुगत को करते २ थोड़े दिनों में हज़ूर राधास्वामी दयाल की दया का सहारा अन्तर में मिलने लगेगा इस वास्ते घबराना नहीं चाहिये और भरोसा उनकी मेहर का मज़बूत रखना चाहिये।

बचन ८४

सब जीव अभी मन के घाट पर बर्त रहे हैं लेकिन जिनकी वह अंश हैं वह कुल्ल मालिक हैं और जो जो उनके चरनों का भरोसा और प्रीत और याद कर रहा

है उनकी ख़बर गीरी सब तरह से वे आप कर रहे हैं और वैसे तो वह सब के हाल को देखते हैं पर जो अकसर उनको प्रीत सहित याद करते हैं और निपट उनकी दया के आसरे हैं वे आप अपनी दया से उनकी ख़बरगीरी करते हैं और उनको सम्हालते हैं एक दिन ज़रूर मन के घाट से अलग कर के अपने निज चरनों के घाट पर पहुंचावैंगे और जब तक ऐसा होवे अवसर अपनी दया और मेहर के अमृत याने प्रेम की धारा से उनकी सुर्त और मन को सींचते रहते हैं नहीं तो यह नाज़ुक पौदे भक्ती के सूख जावैं इस वास्ते मत घबराओ और भरोसा हज़ूर राधास्वामी दयाल की दया का दृढ़ रक्खो वे आप सब काम करा रहे हैं और हर काम में आप मददगार हैं जीव की क्या ताक़त है जो किसी तरह का सच्चा बरताव परमारथ का कर सके बिना उन की मेहर और दया के। धन्य भाग उन लोगों के हैं कि जिन को इस देह में सतगुर मिले और उनको उनके चरनों में निश्चय आ गया॥

कड़ी शब्द

बड़े भाग जिन सतगुर पाये। चौरासी से तुर्त हटाये॥
यह संसार अगिन भंडार। शीतल जल सतगुर आधार॥

बचन ८५

हज़ूर राधास्वामी दयाल की दयालता का क्या ज़िक्र

किया जावे कि वे आपने आप मिले याने आप जीव को खींच कर अपने चरनों में लगाते हैं और जो जो काम परमार्थी और परमार्थी सेवा कि उन के सुनने और ख़्याल करने से जीवों का दिल डरता है और काँपता है अपनी दया से उनको आप सहज में कराते हैं फिर क्या खौफ़ और डर है। वेही सब तरह सम्हाल करेंगे और कर रहे हैं जब तक मिलौनी का खेल है याने परमार्थी और संसारी दोनों काम कर रहे हो तब तक उनकी दया साफ़ और प्रगट कम नज़र आती है और जब मौज से मिलौनी का झगड़ा हटावेंगे तब देखोगे कि किस क़दर दात प्रेम की फ़रमाते हैं। इस बात का सच्चे परमार्थी को अपने मन में निश्चय रखना चाहिये कि एक रोज़ ज़रूर ख़ास दया फ़रमावेंगे और इस बात का मन में भरोसा रखकर उनकी दया का शुकराना करते रहो और चरनों की याद में लगे रहो यह हजूर राधास्वामी दयाल का ख़ास हुक्म है॥

कड़ी

धीरज धरो करो सतसंगत, मेहर दया से लेउँ सुधारा ॥
संशय छोड़ करो दृढ़ प्रीती, और परतीत सम्हारा ॥
तुम्हरी चिन्ता मैं मन धारी, तुम अचिन्त रह धरो पियारा ॥
यह करनी मैं आप कराऊँ, और पहुंचाऊँ धुरदरबारा ॥
वह तो रूप दिखाकर छोड़ू, तुम जल्दी क्यों करो पुकारा ॥

कड़ी शब्द दूसरे की

॥ कौन करे आरत सतगुर की ॥

ब्रह्मादिक सब तरस रहे हैं, मिली नहीं यह पदवी ॥
बड़े भाग जानो अब उनके, जिन को सरन परापत गुर की ॥
गुर समान समरथ नहीं कोई, जिन धुर घर की आन ख़बर दी ॥
मेरे भाग बड़े अब जागे, मिल सतगुर संग आरत करती ॥
भाव भक्ति क्या बया दिखलाऊँ, मैं सतगुर बिन और न रखती॥

इस से ख़्याल करो कि सिर्फ़ हज़ूर राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और परतीत मज़बूत करनी चाहिये फिर सब काम दुरस्त हो जावेंगे। यह प्रीत और परतीत भी वह आप बख़्शते जाते हैं और एक रोज़ पूरी २ बख़्शेंगे ॥

बचन ८६

मन की हालत देखते और परखते चलने से अपनी नालायक़ी मालूम होती है और हज़ूर राधास्वामी दयाल की मेहर और दया पर नज़र करते चलने से उनकी अपार दयालता का हाल मालूम होकर चरनों में दिन २ प्रीत और परतीत बढ़ती है और सरन दृढ़ होती है ॥

बचन ८७

बाहर के कामों में इस मन को रस मिलता है और दिखावे का यह मन आशिक़ है सो उन कामों में यह मन जल्दी लगता है और जो वे न मिलें तो रूठता है और अन्तर के कामों में इसका मरन होता है और इस पर तंगी अत्यंत पड़ती है इस सबब से उन कामों को कम चाहता है और जब तक यह औरों के गुन औगुन उनके नुक़सान पहुंचाने की नज़र से या ख़ुशामद के तौर पर देखता है तब तक इसकी बात का कुछ भरोसा नहीं है अभी अपने हाल की ख़बर नहीं है और न इस तरफ़ की तवज्जह का होश है ऐसे जीव से जो कोई उसके औगुन कहेगा तो बेशक नाराज़ होगा और जो अपने अन्तर में अपने हाल को परखते चलते हैं वह दूसरे का भी औगुन उसके नफ़े की नज़र से देखकर उसकी दुरुस्ती में मदद देंगे और अपने औगुनों की हर वक़्त निरख परख रक्खेंगे और शरमाते रहेंगे और प्रार्थना चरनों में करते रहेंगे सो सब तरह का भरोसा रक्खो और अन्तर में घसने का इरादा मज़-बूत करो हजूर राधास्वामी दयाल सब काम अपनी दया से आप पूरा करवा लेंगे ॥

बचन ८८

जो जुगत कि वास्ते निर्मल करने और चढ़ाने सुरत

के बताई गई है उसको नेम से प्रेम सहित करे जाओ ऐसा नहीं हो सक्ता है कि थोड़े दिनों में उसका फल मालूम पड़े। कुछ दिन रगड़ करनी चाहिये। जो शौक़ तेज़ होगा तो रगड़ बन पड़ेगी ऐसे भरोसे पर कि एक रोज़ ज़रूर हजूर राधास्वामी दयाल अपनी कृपा से अंतर में रस देंगे। बराबर कोशिश करना चाहिये और हठ करना किसी मामले में मुनासिब नहीं है। यह बड़ा ऐब है इस को छोड़ना चाहिये जब तक हठ तबीयत में है तब तक वह जीव सतगुर की पसंद के लायक़ नहीं हो सक्ता है आगे जीवों को अख़्तियार है कि अपना नफ़ा और नुक़सान विचार करके इस औगुन को चाहे कम करें या न करें पर जब तक यह ऐब न छूटेगा सत-गुर का संग अंतर और बाहर दुरुस्ती से हो नहीं सकेगा॥

बचन ८६

अन्तर में सच्चे होकर एक घंटा भी लगना मुशकिल है गोया जान सी निकलती है और बाहर चार पहर इसको लगाओ तो भी नहीं घबराता है पर बिना थोड़ी बहुत लाग अंतर में होने के काम दुरुस्त नहीं होगा इसी सबब से सतगुरु सब जीवों को हमेशा पास नहीं रखते क्योंकि जीव बाहर मुखी होना तो जल्द मंजूर करता है और अंतर में लगना कम चाहता है। जब तक कि प्रीत और परतीत चरनों में किसी क़दर गहिरी

न होवे तब तक संग नहीं रखते हैं और जब प्रीत और परतीत सच्ची और पक्की हो गई तब चाहे संग रहे चाहे दूर कुछ हरज़ न होगा पर किसी २ वक़्त फिर जुदा भी करते हैं ताकि यह अंतर का भी रस हासिल करता जावे और जब २ मुनासिब समझते हैं उसकी प्रीत तेज़ करने और बढ़ाने के लिये बीच २ में दर्शन भी देते हैं पर बराबर साथ रखना नहीं चाहते हैं जब तक कि इस की लाग किसी कदर अन्तर में ठहर न जावे और मज़-बूत न हो जावे। पर यह कायदा आम नहीं है कभी किसी की प्रीत बाहर की मज़बूत करने के लिये और फिर अंतर में अभ्यास कराने के लिये भी संग रखते हैं और जो कोई अन्तर और बाहर बराबर काम करता जावे उसके अलग करने की खास ज़रूरत नहीं होती॥

बचन ६०

जुदाई की हालत में अन्तर में ज़ोर देना चाहिये और अन्तर में लगाने से प्रीत और परतीत सतगुर की ज़ियादा होती है क्योंकि अन्तर में इसको सतगुर की लीला मालूम होती है। यह बचन उनको प्यारा लगेगा जिनकी तबीयत में शौक़ अंतर का ज़ियादा है और जिन को शौक़ ऐसा नहीं है या अन्तर की महिमा उनके चित्त में नहीं समाई है याकि वे मन पर ज़ोर नहीं दे सकते उनको यह बचन कम पसंद आवेगा॥

बचन ९१

तपन हमेशा एक सी नहीं रहेगी आहिस्ते २ इसके साथ सीतलता भी मिलती जावेगी और एक दिन सतगुर दयाल अपनी मेहर से बरषा प्रेम की फ़रमावैंगे पर इस बात को कुछ देर चाहिये और इस दरमियान में दया हुजूर राधास्वामी दयाल की दिन २ ज़ियादा मालूम होती जावेगी यह नहीं कि निरा रूखा फीका रहे। और हुजूर राधास्वामी दयाल की मौज की ख़बर नहीं कि चाहे जब बख़्शिश फ़रमावैं पर इसमें कुछ शक नहीं है कि वे सब तरह से दया अपनी कर रहे हैं पर जीवों को अपनी कम सफ़ाई के सबब से दया का हाल कम मालूम होता है और मलीनता के सबब से तपन ज़ियादा व्यापती है सो कुछ हर्ज नहीं है जिस क़दर मलीनता घटती जावेगी उसी क़दर सफ़ाई होती जावेगी और उसी क़दर दया भी मालूम होती जावेगी। इस वास्ते घबराना और निरास होना नहीं चाहिये हुजूर राधास्वामी बड़े समर्थ और महा दयाल हैं और जीवों का कल्यान सदा करते हैं और जो जीव आप अपना फ़िक्र कर रहे हैं उनकी ख़बर ज़ियादा लेते हैं॥

बचन ९२

इस ज़माने में बहुत कम लोग हैं जिनको फ़िक्र अपने जीव के कल्यान का है हर कोई संसार के पदारथ

चाहता है और उसी में मगन होता है यह सब हज़ूर राधास्वामी दयाल की कृपा है कि अपने जीवों को संसार के पदार्थों का पूरा भोग और रस नहीं देते हैं और चरन और दर्शन की चाह उनके मन में बढ़ाते जाते हैं सो यह चाह उन्हीं की बख़्शी हुई है और वे इस चाह को आप एक दिन आहिस्ते २ पूरा करेंगे घबराओ मत भरोसा दृढ़ रक्खो। इस क़दर दया और दात जैसी हज़ूर राधास्वामी दयाल इस समय में जीवों पर कर रहे हैं किसी अगले वक़्त में नहीं हुई सो उनकी दया से सब काम पूरा होगा जल्दी में नुक़सान का डर है और हरज भी है याने जैसा चाहिये काम पूरा नहीं बनता है आहिस्ते २ काम पूरा और दुरुस्त होता है ॥

बचन ६२

भूल और चूक हज़ूर राधास्वामी दयाल हमेशा माफ़ फ़रमाते हैं पर जिस क़दर बने सम्हाल करनी चाहिये और हज़ूर राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रार्थना करनी चाहिये। वे आहिस्ते २ सब अंग दुरुस्त कर लेंगे जल्दी न करो और जहाँ तक हो सके जो जो जुगत बताई गई है उन में से जौन सी बन सके उसी को करो पर ख़्याल भी रक्खो कि जैसे बने अंतर में धसना और वँहीं शाँती थोड़ी बहुत प्राप्त करना चाहिये ॥

बचन ६४

मन का हाल ऐसा है कि कभी भाव और कभी अभाव में बर्तता है सतगुरू इस के हाल को खूब जानते हैं और इसी सबब से जीवों की भूल चूक पर नज़र नहीं करते हैं और अपनी दया हमेशा जारी रखते हैं और अंत में आप अपनी कृपा से इस जीव को निकाल लेंगे और जब २ यह चूकेगा और भूलेगा तब २ अपनी दया से आप इस के औगुनों को इस को दिखला कर सम्हालेंगे और हर वक्त इसकी सम्हाल वे आप रखते हैं इस को क्या ताक़त है कि अपने आप को सम्हाले याकि बुरे कामों से बचे। हज़ूर राधास्वामी दयाल का यह हुक्म है ॥

कड़ी

गुरू और शब्द यह दोउ मीत। नहीं कोइ और इन घर चीत ॥
यही सत पुरुष यही करतार। लगावें तोहि इक दिन पार ॥
करें वह नित्त तेरी सार। तेरे तन मन के हैं रखवार ॥
बिसारो मत उन्हें हर बार। दुक्ख और सुक्ख रहो उन धार ॥
शुकर कर राख हिरदे धार। मिटावें दुक्ख सबही भार ॥

इस में कोई बात बाक़ी नहीं रही क्या तन और क्या मन दोनों के रखवार वे आप हैं पर यह हाल उन सेवकों का होगा जो पूरे २ सरन में आये हैं याने अपनाये हुए हैं और सुरत तो खुद उनकी अंस है उसकी तो

सदा रक्षा रहती है और रक्षा क्या बल्कि वह कभी उलझेरे में फसी भी नहीं है सिर्फ़ तन मन के संग से झोका खाती है पर आप अलग है पर इनका संग कर रही है इसी सबब से फसी नज़र आती है और हक़ीक़त में जब तक कि सतगुरु नहीं मिलेंगे और अपनी दया से उसको न निकालेंगे याने तन मन से अलग न करेंगे तब तक बार २ जनम धरके फसी रहेगी और चौरासी के चक्कर से नहीं निकलेगी ॥

बचन ६५

सच्चे सेवकों के बड़े भाग हैं कि हज़ूर राधास्वामी दयाल ने अपनी मौज दया से आप उनको चरनों में खैंचा और लगाया जैसा कि इन कड़ियों में लिखा है ॥

कड़ी

बड़े भाग जिन सतगुर पाये। चौरासी से तुर्त हटाये॥
दुक्ख सुक्ख जो व्यापत होई। पिछले कर्म भोग हैं सोई॥
कोइ दिन रोग सोग हट जावें। देर नहीं जल्दी भुगतावें॥

यह सब हज़ूर राधास्वामी दयाल की कृपा के चरित्र हैं वे अपनी दया से आप सच्चे परमार्थी को आहिस्ता २ अंतर में लगाते हैं। भरोसा रक्खो और चरनों में प्रार्थना करते रहो। वे सब काम आप करेंगे और जैसी जैसी मदद अंतरी और बाहर की दरकार होगी अपनी दया से आप देंगे इस में कुछ शक नहीं है कि

जीवों का भाग बहुत बड़ा है कि वे ऐसे दयाल मालिक के चरन सरन में आये नहीं तो देखो संसार का क्या हाल है कि काल के चक्कर में सब जीव बह रहे हैं और न अपनी ख़बर और न अपने मालिक की ख़बर और न इस बात का खोज । बल्कि जो कोई कुछ कहे और समझावें तो सुनना और समझना और मानना बिलकुल नहीं चाहते हैं इस वास्ते बारम्बार हज़ूर राधास्वामी दयाल का शुकराना वाजिब है कि ऐसा ऊँचा और गहरा मत और ऐसा ऊँचा घर बख़्शा और ऐसी जुगत बतलाई है कि तीन लोक में किसी को हासिल नहीं है फिर थोड़े दिनों की देरी के सबब से क्यों घबराते हो दिन २ तरक़्क़ी और सफ़ाई हासिल होती जाती है ॥

बचन ६६

जो कुछ मलीनता मालूम होती है वह जल्दी साफ़ होगी और जब तक कि बाक़ी है कुछ उस में भी मसलहत है कि थोड़े दिन उसका थोड़ा बहुत रहना मुनासिब और ज़रूर है वास्ते सफ़ाई कुल्ल के और काररवाई तन और मन के क्योंकि हाल में दोनों काम परमार्थी और संसारी जारी हैं । कभी अपने मन में संशय मत लाओ कि हज़ूर राधास्वामी दयाल भूल गये हैं, नहीं । जो २ हज़ूर राधास्वामी दयाल को मान रहा है

और ध्यावता है वह हजूर राधास्वामी दयाल के चरनों में है और हजूर राधास्वामी दयाल को हर वक़्त उसकी सम्हाल आप मंजूर है चाहे वह सतसंग में रहै या दूर—इस वास्ते घबराना मत और भरोसा दृढ़ रखना और शुकराना बारम्बार करते रहना और आगे के वास्ते उम्मेद तरक्क़ी और बेहतरी की रखना । हजूर राधास्वामी दयाल ऐसे नहीं हैं कि जीवों की मेहनत का ख्याल करके इनाम न दें बल्कि ऐसे महा दयाल हैं कि सब पर अपने बच्चों की तरह दया करते हैं और भूल और चूक का ख़याल न करके अपनी दया से वह दात बख़्शने वाले हैं कि जो जीवों के ख़याल और समझ में भी नहीं आ सक्ती है ॥

बचन ६७

प्रथम तो हजूर राधास्वामी दयाल आप सम्हाल फ़रमाते हैं पर जीवों को भी अपना ज़ोर जिस क़दर बने लगाते रहना मुनासिब है इस में भी मसलहत है और इस मन की घड़त ऐसे ही होती है । सम्हाल रखने वाले वे आप दयाल हैं दूसरे की क्या ताक़त, और इस जीव की कहाँ गति, कि किसी तरह की सम्हाल अपनी रख सके पर धन्य २ हजूर राधास्वामी दयाल जो ऐसे नालायक़ों को अपनी दया करके सच्चे परमार्थी बना रहे हैं और उनका रास्ता चला रहे हैं ॥

बचन ९८

सतगुरु के स्वरूप का ध्यान अस्थान के हिसाब से दिन प्रति नेम से करना मुनासिब है और जिस क़दर आनंद की प्राप्ती होवे उसको बहुत समझना चाहिये। सहज २ कभी २ साफ़ दर्शन भी मिलेगा पर जिस क़दर दर्शन हासिल होवे या आनंद प्राप्त होवे उसको दया समझना चाहिये सबब देरी का यह है कि मन अभी बिलकुल सफ़ा नहीं हुआ है जितनी इसमें मलीनता है उतनी दर्शनों में भी सफ़ाई की कमी है सो सहज २ सफ़ाई होती जाती है घबराना मुनासिब नहीं है और सब काम मौज के हवाले करके जिस क़दर अपने से हुशियारी बने करे जाना चाहिये बाक़ी सतगुरु दयाल अपनी दया से आप सम्हालेंगे॥

बचन ९९

सतगुरु की दया का भरोसा रखकर अभी दोनों काम स्वार्थी और परमार्थी करे जाओ अभी ऐसी ही मौज नज़र आती है आगे जैसी मौज होगी वे आप उसका बंदोबस्त कर देंगे और जो कुछ मुनासिब होगा कर लेंगे और जो हालत गुज़र रही है बिना मौज के नहीं है और जब यह हालत हजूरी मौज से है तो उसमें ज़रूर मसलहत और फ़ायदा होगा चाहे हाल में नज़र आवे या नहीं इस से भरोसा चरनों का दृढ़ रखकर हिम्मत रक्खो और दया का बल लिये जाओ

और उसके मुआफ़िक़ काम करते रहो ॥

बचन १००

वक्त़ तकलीफ़ के तबीयत को निहायत घबराहट और बेकली होती है पर क्या किया जावे इसमें भी कुछ मौज होगी नहीं तो क्यों ऐसी हालत होवे पर वह मौज अभी अच्छी तरह समझ में नहीं आती और जो बचन हजूरी हैं वह वक्त़ तकलीफ़ के याद नहीं आते हैं और जो आवें भी तो उनका असर दिल पर ऐसा नहीं होता है कि बेकली को दूर करे। सबब इसका सिवाय इसके कि मन अभी माया और संसार का मुहताज है दूसरा समझ में नहीं आता है और असल में ऐसा ही हाल है क्योंकि अपनी हालत ग़ौर करके देखने से अपना हाल अपने तईं ख़ूब मालूम होता है फिर चिंता नहीं है हजूर राधास्वामी दयाल का भरोसा चाहिये वे एक न एक दिन निर्मल कर लेंगे और अपनी दया से ताक़त बख़्शेंगे ॥

बचन १०१

हजूर राधास्वामी दयाल हैं वे आप अंतर में थोड़ा २ सहारा देते जायेंगे कि जिसमें तन की तकलीफ़ और बेक़रारी कम होवे या न रहे पर मन और सुरत में थोड़ी बहुत बेकली ज़रूर चाहिये क्योंकि बग़ैर इसके चाल नहीं चलती है और सफ़ाई नहीं होती ॥

बचन १०२

जो जीव इस बात का सोच करते हैं कि क्या उपाय करैं कि जिससे परमारथ का फल जल्द मिले सो सिवाय इसके कोई उपाय नहीं है कि हजूर राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और परतीत का बढ़ाना और निश्चय दृढ़ रखना यानी सरन पूरी और पक्की उनके चरनों की धारन करना यही जतन मुनासिब है सो इस जीव की तो कुछ गति नहीं है यह बात भी जिस किसी को अपना फ़िकर रहता है और चरनों में प्रार्थना इस बात की रखता है उसको हजूर राधास्वामी दयाल अपनी दया और कृपा से आप बख़्शैंगे यानी प्रीत और परतीत आहिस्ते २ बढ़ाते जावैंगे। जो उनके चरनों में थोड़ी भी प्रीत है और सरन उनकी ऐसी ले रक्खी है कि सिवाय उनकी दया के दूसरे का भरोसा चित्त में नहीं आता है जो कुछ सोच की बात नहीं है ऐसे जीवों को भी सम्हालैंगे।

बचन १०३

पूरी सरन का स्वरूप यह है कि सतगुरु राधास्वामी दयाल को सर्व समर्थ जाने और सब कामों में क्या संसारी क्या परमार्थी उन्हीं के चरनों का भरोसा अंतर में रक्खे दूसरे की तरफ़ चित्त न जावे। बाहरी कामों के वास्ते बाहरी सहारा जो लेवे तो कुछ हर्ज नहीं पर

मन में यह समझता रहे कि यह बाहरी आसरे भी उनकी मौज से पैदा हुए और काम देते हैं बग़ैर उनकी मौज के कोई भी कुछ मदद और सहारा नहीं दे सकता है और अंतर में यह निश्चय दृढ़ रहे कि जैसा सतगुरु राधास्वामी चाहेंगे वैसा करेंगे दूसरा कोई समरथ नहीं है और न कोई बिना उनकी मौज और दया के कुछ कर सकता है। जिसकी ऐसी सरन है वह उनके भरोसे पर रहे और उनकी मौज के साथ मुआफ़िक़त करे। और जो अपने मन की हालत देख कर चित्त में डर आता है सो यह भी दया है ऐसा डर लेकर सरन को ज़्यादा मज़बूत करे और नहीं तो ढीलम ढाल रहेगा और चरनों में कभी २ पुकार और प्रार्थना वास्ते प्रीत और परतीत की तरक़्क़ी के करना चाहिये॥

बचन १०४

जिन के दिल में मुख्य चाह सतगुरु राधास्वामी दयाल के चरनों की प्राप्ती की है और दूसरी चाहें अगर हैं भी तो गौन याने थोड़ी हैं उनको सच्चे प्रेम की दात मिलेगी और मन का तो स्वभाव संसारी है यह तो जब झुकेगा तो उसी तरफ़ को पर जिसके ऊपर हज़ूर राधास्वामी दयाल की मेहर और दया है उसकी वे आप सम्हाल करते हैं और संसारी चाहों से उसको बचाते हैं और जो उसके दिल में तरंगें बेफ़ायदा उठती हैं तो

उन चाहों को पूरा नहीं होने देते और दिन २ अपने चरनों के दर्शन की चाह बढ़ाते हैं और उसी में उसको रस देते हैं इसी तरह आहिस्ता २ सफ़ाई होती जाती है और एक दिन कारज पूरा हो जावेगा ॥

बचन १०५

जीव की क्या ताक़त कि सतगुरु की बख़्शायश के लायक़ सेवा और भजन कर सके वे तो मेहर और दया से तारेंगे । बानी में फ़र्माया है ॥

॥ कड़ी ॥

जिस पर दृष्टि पड़ी मेरे गुर की सोई पार गई ॥
कौन कहे महिमाँ अब उनकी जिनको सतगुरु चरन लगावैं॥

अब कुछ सोच मत करो पर अपनी हालतों पर शरमाते और पछताते रहो और चरनों में दीनता और प्रार्थना करते रहो सब तरह से वे आप कारज सम्हालेंगे जीव की कुछ ताक़त नहीं है और जैसा २ और जब २ मुनासिब समझैंगे उसी मुआफ़िक़ काररवाई करेंगे और करालेंगे॥

बचन:१०६

यह मन ऐसा खोटा है कि ज्यों की त्यों सतगुर दयाल की परतीत नहीं करता है इसी सबब से घबराहट पैदा होती है नहीं तो उनके चरनों की याद में और दया के भरोसे में निरा आनंद ही आनंद है जो कभी

ऐसी प्रतीत आ भी जाती है तो ठहरती नहीं है पर इस मैं भी कुछ मसलहत है। यह हालत जीवों की अभी इसी लायक़ है याने अभी सफ़ाई पूरी नहीं हुई है और इतना और ख़्याल रक्खो कि जो मौज से होता जावे उस पर जैसे बने तैसे मन को खैंच खाँच कर मौज के अनुसार बर्ताव के दर्जे पर लाओ तब फल उसका हमेशा बेहतर नज़र आवेगा ॥

बचन १०७

सवाल एक शख़्स का—कि तुम राधास्वामी नाम कहते हो स्वामी क्यों नहीं कहते। ऐसा सुना है कि राधा नाम सेवक का है तो सेवक के नाम को स्वामी के नाम के संग मिला कर सुमिरन करना दुरुस्त नहीं मालूम होता है ॥

जवाब—राधा आदि सुरत का नाम है और स्वामी नाम आदि शब्द का है। आदि शब्द से जो प्रथम धारा जारी हुई उसका नाम राधा है जो कोई इस धारा को पकड़ेगा वही आदि शब्द मैं पहुँचेगा इस वास्ते इस धारा का पहिले से सुमिरन और पकड़ना सब चलने वालों को मुनासिब है क्योंकि बिना प्रीत इस धारा के रास्ता नहीं चल सक्ता है और आदि शब्द मैं प्रीत बग़ैर इस धारा मैं प्रीत करने के लग नहीं सक्ती है और जो कि यह धारा साक्षात् शब्द का स्वरूप है और उस मैं

और आदि शब्द में कुछ भेद नहीं है सिर्फ़ धारा के जारी होने से दो दिखाई देते हैं जैसे जल और उसकी तरंग इस वास्ते यह दोनों नाम राधास्वामी असल में एक हैं पर जब प्रकाश दो रूप का हुआ तो दो नाम हो गये इस वास्ते दोनों नाम का जाप याने सुमिरन और उन दोनों रूप में प्रीत करना मुनासिब और ज़रूरी है बग़ैर दोनों नाम लेने के रास्ता नहीं चलेगा और जो कि सिर्फ़ स्वामी को मनावेंगे वे जहाँ के तहाँ बैठे रहेंगे रास्ता नहीं चलेगा और जो इस धारा को सुमिरते हुए और पकड़ते हुए स्वामी की तरफ़ चलेंगे वे पहुँचेंगे पहिले इस धारा से काम पड़ेगा फिर स्वामी से। इस वास्ते पहिले नाम इस धारा का और फिर नाम स्वामी का दोनों मिला कर सुमिरना चाहिये और इस धारा को जो आदि सुरत कहा है तो इससे यह मतलब नहीं है कि वह धारा वह सुरत है कि जो नीचे उतर कर काल के देस में आन कर देह में फस गई यह तो असल धारा सुर्त की है जो आदि में प्रगट हुई है। इसी तरह और भी धारा दूसरे मुक़ामों से ज़ारी हुईं यह धारा तो अगम लोक में ख़तम होकर रह गई फिर वहाँ से इसी तरह से धारा निकली और ऐसे ही सत्तलोक से। इस वास्ते यह धारा जो सुरत की हर एक मुक़ाम से निकलती आई इसी धारा को पकड़ कर दर्जे बदर्जे चलना चाहिये

और जो सुरत कि यहाँ बस गई और संसार में उसकी मुख्यता हो गई वह अब उस धारा से किसी क़दर अलग हो गई और जो धारा कि आदि में प्रगट हुई वह धुर मुक़ाम से मिली हुई और एक हो रही है इस वास्ते यह धारा सेवक नहीं हो सक्ती पर और सुरतें जो नीचे उतर आईं और जो यहाँ आकर ठहर गईं वह बेशक सेवक हैं यह धारा तो ख़ास स्वामी का स्वरूप है और हमेशा स्वामी के संग रहती है कभी अलग नहीं हुई है और जो कि सुरत उस असली धारा को पकड़ कर स्वामी के चरनों में पहुँच जावे तब वह सुरत असली सुरत में मिल जावेगी याने वह सुरत और राधा सुरत एक हो जावेगी उस वक़्त सेवक स्वामी मिल गये फिर ऐसे सेवक की सुरत को जो राधा सुरत कहो तो मुज़ायक़ा नहीं है और वह सुरत मुआफ़िक़ अपने स्वामी के जिन से वह जाकर मिली पूजने और सराहने जोग है क्योंकि उस सुरत से प्रीत करने से और सुरतें भी उसके उपदेश के अनुसार करनी करके स्वामी के चरनों में पहुँच सक्ती हैं॥

कड़ी

यह करनी का भेद है, नाहीं बुद्धि बिचार।
बुद्धि छोड़ करनी करो, तो पाओ कुछ सार॥

वचन १०८

यह दुरुस्त है कि निश्चल होना मन का मुशकिल है और निर्मल भजन करना भी मुशकिल है पर स्वरूप का ध्यान और नाम का सुमिरन किसी क़दर आसान है। और फिर अभ्यास अंतर में ज़रूर करना चाहिये जिस क़दर बन सके और जो नहीं बने तो बिलफ़ेल दो चार शब्द का पोथी में से पाठ करना मन और सुरत के साथ और नाम का सुमिरन ज़बान दिल से पहिले अस्थान के स्वरूप के ध्यान सहित करना चाहिये बाक़ी हज़ूर राधास्वामी दयाल की दया का भरोसा रखना चाहिये उनको गढ़त मन की सब तरह मंज़ूर है जो अब जैसा चाहिये अभ्यास नहीं बनता है तो आइंदे वे भजन और सुमिरन ध्यान मुनासिब तौर पर आप करावेंगे॥

वचन १०९

सवाल—काल और सुरत से क्या निस्बत है॥

जवाब—जैसे बिल्ली की चूहे के साथ—याने सुरत जो सतगुर की अंस है उसको काल और मन उसके प्यादे ने अपने बस कर रक्खा है और सतगुर की तरफ़ से बेमुख कर रक्खा है जब सुरत सतगुर के सन्मुख होती है और बचन सुन कर प्रीत और परतीत बढ़ाना चाहती है तब मन अपनी घात में रहता है जैसे बिल्ली

चूहे की घात में रहती है कि ज्यों चूहे ने बिल में से सिर निकाला वोंहीं लपकी और चूहा बिल में भाग गया इसी तरह चूहा निकलने के घात में रहता है और बिल्ली पकड़ने के घात में रहती है मगर चूहा मौक़ा पाकर निकल जाता है इसी तरह सुरत भी मन के घेर में है और सतगुर के बचन सुनकर इरादा निकलने का करती है पर मन उसको अनेक तरह के चक्कर और ख़्याल में डाल देता है यही सबब है कि जीव साधारन तौर पर नित्त सतसंग करते हैं और हालत नहीं बदलती है और जो चेत कर सतसंग करते हैं वही काल की घात को और हज़ूर राधास्वामी सतगुर की दया को निरखते और परखते हैं और काल के जाल को सतगुरु के बल से तोड़ कर आहिस्ते २ साफ़ निकल जाते हैं। जो सच्चे परमार्थी हैं उनको इस हाल की ख़बर होगी और संसारी और रोज़गारी लोगों को जो काल को ही दयाल जान कर उसके जाल के फंदे में पड़े हैं और मन की ख़्वाहिशों के मुआफ़िक़ काररवाई करते हैं इस हाल की क्या ख़बर है॥

बचन ११०

सतगुरु फ़रमाते हैं कि जीव के अंतर में अनेक तरह की हिलोरें काम और क्रोध और लोभ और मोह वग़ैरह की उठती हैं सबब इसका यह है कि इन सब का भंडार इस जीव के अंतर में है। जो जो तरंग ज़ोर करती है

उसके ख़ज़ाने से अव्वल हिलोर उठती है और वहाँ से चलकर मिस्ल धार फ़व्वारे के खड़ी होकर इरादा बाहर निकलने का करके उसी द्वारे की तरफ़ रुजू होती है जिस द्वारे यानी इन्द्री के भोग से उसका सम्बन्ध है। इस हाल की उन्हीं को ख़बर पड़ती है जो चेतकर सतसंग और भजन करते हैं और बचन सुन कर उसका मनन भी बाद सतसंग के करते हैं और उसके मुआफ़िक़ बरताव भी करना चाहते हैं। उनको हिलोर उठते ही ख़बर पड़ जाती है और वे जहाँ तक मुमकिन होता है तरंगों की धार को उठने नहीं देते और जो चेत कर सतसंग नहीं करते उनको हिलोर और उसकी धार इस तरह से बहा ले जाती है जैसे कोई अपने घर के अंदर बैठा है और जो कहीं बाहर के बाजे या तमाशे की आवाज़ सुनी फ़ौरन घर के अंदर से निकल कर खिड़की या झरोके से तमाशा देखने लगा और जिनको ज़्यादा शौक़ हुआ तो घर से बाहर निकल कर खेल और तमाशे में शामिल हो गये इस क़दर कि घर की सुध भी नहीं रही ऐसे जो जीव हैं याने जो मन के हिलोर और तरंगों में बह रहे हैं और इस हालत से बेख़बर, उनको भजन और सतसंग और दर्शन का फ़ायदा बहुत कम होता है और जो चेत कर भजन और सतसंग करते हैं वे मन और इन्द्रियों को थोड़ा बहुत अपने बस में रखते हैं॥

॥ समाप्त ॥